

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 27

मई-1-2025

अंक - 03

माउण्ट आबू

Rs.-12

ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका

101 वर्षीय दादी का महाप्रयाण

ज्ञान सागर की गहराईयों में उतर, उत्तरोत्तर प्रगति करने वाली, प्रकृति के पंचतत्वों को अपने वश कर, परमात्मा के ज्ञान रत्नों को अपने में धारण कर, समाज के हर एक वर्ग की प्रेरणास्रोत, मानव दिग्दर्शिका और आध्यात्मिक-पदचिन्ह बनाने की नायिका, परमात्म रत्नों से स्वयं को सजाने वाली जहान की नूर, परमात्मा की हूर हमारी अति स्नेही आदरणीया दादी जी को हम सभी का शत-शत नमन।



सम्मान
जो समा लेता है और
अपमान का जो न लेता
प्रतिशोध,
तब उसकी उन्नति में नहीं आता कोई
अवरोध,
इसकी मिसाल थीं
हमारी दादी...

शान्तिवन-आबू रोड (राज.)। ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी अव्यक्त होकर वतनवासी हुई। उन्होंने अहमदाबाद के जाइडस हॉस्पिटल में रात्रि 1:20 बजे अंतिम सांस ली। उनके पार्थिव शरीर को शान्तिवन में लाया गया और मुख्यालय शान्तिवन के कॉन्फ्रेंस हॉल में अंतिम दर्शनार्थ रखा गया था। 10 अप्रैल को सुबह 10 बजे अंतिम संस्कार दादी जी के कॉटेज के सामने बगीचे में किया गया।

चार वर्ष पूर्व बनी थीं मुख्य प्रशासिका

चार वर्ष पूर्व दादी हृदयमोहिनी के देहावसान के बाद आप मुख्य प्रशासिका बनी थीं। पिछले 40 साल से आप संस्थान के युवा प्रभाग की अध्यक्ष रही। आपके नेतृत्व में वर्ष 2006 में भारतभर में निकाली गई युवा पदयात्रा को लिम्का ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया था। आप मात्र 13 वर्ष की आयु में ही ब्रह्माकुमारीज से जुड़ीं और पूरा जीवन समाज कल्याण में समर्पित कर दिया। 101 वर्ष की आयु में भी दादी जी की दिनचर्या अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में 3:30 बजे से शुरू हो जाती थी। सबसे पहले वह परमपिता शिव परमात्मा का ध्यान करती थीं और सुबह से ही उनका हर कर्म परमात्म श्रीमत के अनुसार चलता रहा। राजयोग मेडिटेशन उनकी दिनचर्या में शामिल रहा। उनका पूरा जीवन निर्माणचित्त रहा।

सिंध हैदराबाद में हुआ था जन्म

25 मार्च 1925 को सिंध हैदराबाद के एक साधारण परिवार में दैवी स्वरूपा बेटी ने जन्म लिया। माता-पिता ने जिनका नाम रखा लक्ष्मी। किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि कल यही बेटी अध्यात्म और नारी शक्ति का जगमग सितारा बनकर सारे जग को रोशन करेगी। बचपन से अध्यात्म के प्रति लगन और परमात्मा को पाने की चाह में मात्र 13 वर्ष की उम्र में लक्ष्मी ने विश्व शान्ति और नारी सशक्तिकरण की मुहिम में खुद को झोंक दिया।

87 वर्ष की यात्रा की रहीं साक्षी

दादी वर्ष 1937 में ब्रह्माकुमारीज की स्थापना से लेकर आज तक 87 वर्ष तक यात्रा की साक्षी रही हैं। पिछले 40 से अधिक वर्षों से आप संगठन के ही युवा प्रभाग की अध्यक्ष रही हैं। आपके नेतृत्व में युवा प्रभाग द्वारा देशभर में अनेक राष्ट्रीय युवा पद यात्राएं, साइकिल यात्रा और अन्य अभियान चलाए गए।

ब्रह्मा बाबा के साथ 32 साल का लंबा सफर

दादी रतनमोहिनी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार रहे। छोटी-सी उम्र होने के बाद भी आप अन्य बच्चों की तरह खेलने-कूदने के स्थान पर ईश्वर की आराधना में अपना ज़्यादा वक्त गुजारती थीं। आपका स्वभाव धीर-गंभीर था। पढ़ाई में भी होशियार होने के साथ प्रतिभा सम्पन्न रहीं हैं। दादी जी ने वर्ष 1937 से लेकर ब्रह्मा बाबा के हर पल साथ रहीं। बाबा का कहना और दादी का करना यह विशेषता दादी जी में शुरू से ही थी।

दादी जी के नेतृत्व में 40 साल से युवा प्रभाग

युवा प्रभाग द्वारा दादी जी के नेतृत्व में 2006 में निकाली गई स्वर्णिम भारत युवा प्रभाग द्वारा स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा ने ब्रह्माकुमारीज के इतिहास में एक नया अध्याय लिख दिया। 20 अगस्त 2006 को मुंबई से यात्रा का शुभारंभ किया गया और 29 अगस्त 2006 को तिनसुकिया, असम में समापन किया गया। स्वर्णिम भारत युवा पदयात्रा द्वारा पूरे देश में 30 हजार किमी का सफर तय किया गया। इसमें पांच लाख से अधिक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने भाग लिया। सवा सौ करोड़ लोगों को शान्ति, प्रेम, एकता, सौहार्द, विश्व बंधुत्व, अध्यात्म, व्यसनमुक्ति और राजयोग का संदेश दिया गया।

देश में बनाए कई रिकॉर्ड

दादी के ही नेतृत्व में 1985 में भारत एकता युवा पदयात्रा निकाली गई। इसमें 12550 किमी की दूरी तय की गई। यात्रा का शुभारंभ तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय से किया था। कन्याकुमारी से दिल्ली (5000 किमी) की सबसे लंबी यात्रा रही। भारी बारीश और तूफान के दौरान भी राजयोगी भाई-बहनों के कदम नहीं रुके और रेगिस्तान, जल, जंगल, पर्वत को लांघते हुए मिशन पूरा किया। दादी के निर्देशन में करीब 70 हजार किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्राएं निकाली गईं।

ब्रह्माकुमारीज बहनों की ट्रेनिंग और नियुक्ति का किया नेतृत्व

वर्ष 1996 में ब्रह्माकुमारीज की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में तय हुआ कि अब विधिवत कन्याओं को ब्रह्माकुमारी बनने की ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके लिए एक ट्रेनिंग सेंटर बनाया गया और तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने दादी जी की ट्रेनिंग प्रोग्राम



आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को ब्रह्मा बाबा का चित्र भेंट करते हुए मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी जी।



शान्तिवन के निकट मल्टी स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल के शिलान्यास के अवसर पर शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी, मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दादी।

की मुखिया नियुक्त किया। तब से लेकर आज तक बहनों की नियुक्ति और ट्रेनिंग की जिम्मेदारी दादी जी के हाथों में रही। दादी के नेतृत्व में अब तक 6000 से भी अधिक सेवाकेन्द्रों की नींव रखी गई है।

1985 में दादी ने की 13 पैदल यात्राएं...

वर्ष 2006 में निकाली गई युवा पदयात्रा ने लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया, वही सभी यात्रियों ने 30 हजार किमी की पैदल यात्रा तय की। दादी ने 13 मेगा पैदल यात्राएं की हैं। अगस्त 1989 में देश के 67 स्थानों पर एक साथ अखिल भारतीय नैतिक अभियान चलाया गया। अभियान में सैकड़ों स्कूल-कॉलेजों, युवा क्लब और सामाजिक सेवा संस्थानों में प्रदर्शनियां, व्याख्यान, सेमिनार और रचनात्मक कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इनमें कई राज्यों के राज्यपाल व मुख्यमंत्रियों ने भाग लिया।

दादी जी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा

20 फरवरी 2014 को गुलबर्गा विश्व विद्यालय के 32वें दीक्षांत समारोह में कुलपति प्रोफेसर - शेष पेज 3 पर...

यूथ की धड़कन, युगर्तन दादी रतनमोहिनी



राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

संगमयुग का समय ईश्वरीय यज्ञ के इतिहास में कई पड़ाव को पार करते हुए सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ता जा रहा है। ऐसे में 8 अप्रैल 2025 में एक और कड़ी जुड़ गई जहाँ हमारी अति स्नेही परम आदरणीया आदिरत्न दादी रतनमोहिनी ने अपनी जीवन यात्रा को सम्पन्न कर सम्पूर्णता को प्राप्त हुई। परमात्मा ने

महापरिवर्तन के कार्य के लिए भाग्यशाली आत्माओं का चयन किया जिनमें से एक दादी रतनमोहिनी भी थीं। दादी के जीवन को अगर देखें तो प्रमुख रूप से चार बातें दिखाई देती थीं। जोकि अलर्ट, एक्ज्यूट, पंक्चुअल और इकॉनमी उनके जीवन से झलकती थी। दादी की रूचि पढ़ाई में बहुत थी, नया-नया सीखना और दूसरों को सिखाना, ये उनका निजी गुण था। बाबा की बनाई हुई दिनचर्या को अपनाना, जिस समय जो कार्य होता उसे उसी समय करना और उसका स्वरूप बनकर जीना उनका व्यक्तित्व रहा। बाबा के ज्ञान रत्नों की गहराई में जाकर उसके स्वरूप को अनुभव करना और उसे साथियों के साथ शेयर करना, माना कि जैसे वो उनके जीवन का हिस्सा हो। वें हमेशा मुस्कराते हुए बहुत सहजता से परमात्म ज्ञान को दूसरों को बताना उनकी खूबी थी। उम्र में भले छोटी थीं किन्तु कहीं पर भी समाज में बड़े लोगों से मिलना और उनको परमात्म ज्ञान देने में न डरती थीं और न घबराती थीं। अपनी बात प्रखरता से तर्क सहित दूसरों के सामने रखती थीं। इसीलिए इन सब विशेषताओं के कारण बाबा ने उन्हें टीचर्स को ट्रेनिंग देने का दायित्व सौंपा। बाबा का ये विश्वास उन्होंने कभी नहीं तोड़ा और जीवन पर्यन्त टीचर्स को या यूँ कहें कि परमात्म संदेश को विश्वभर में देने हेतु योग्य टीचर्स की टीम तैयार की। सभी में हिम्मत, साहस भरना और सभी को सत्यता पर अडिग रहना सिखाया। आज तक हमने देखा कि अपने जैसे कईयों को तैयार कर विश्व परिवर्तन के कार्य करने के योग्य बनाया।

विशेष रूप से दादी यूथ-ऊर्जा को सही दिशा देकर संगम से सतयुग की ओर आगे बढ़ने का उनमें जज़्बा पैदा किया। वे भी खुशी-खुशी से परमात्मा के कार्य में अपना हाथ बढ़ाकर आज भी अपने भाग्य को चमका रहे हैं। दादी हमेशा अलर्ट रहतीं, वें समय को महत्व देतीं और एक-एक पल को कैसे सफल करना ये हम उनके जीवन से सीख सकते हैं। हमें जब भी दादी जी से मिलने का अवसर मिलता तो दादी हमेशा कहतीं ये बाबा का यज्ञ है, करनकरावनहार बाबा है हमें तो सिर्फ उमंग-उत्साह में रह अपना भाग्य बनाना है। दादी इकॉनमी की अवतार थीं, मैं जब दादी जी से कुछ कार्य अर्थ पाण्डव में स्थित छोटे-से ऑफिस में मिलने गया और दादी जी को अपनी बात बताई। पहले तो दादी जी ने बड़ी स्नेहभरी दृष्टि दी और फिर पूछा कि बताइए, तो मैंने कार्य में आई कठिनाई के बारे में बताया, तो दादी ने बड़े स्नेह से मेरी ओर देखा और टेबल पर रखे एक छोटे-से कागज के टुकड़े में लिखा कि 'जो हो रहा है वो अच्छा है और आगे भी अच्छा ही होगा।' मैं यह पढ़कर हल्का हो गया। सचमुच जो मुझे कठिन व मुश्किल लग रहा था वो कार्य दिन बीतते ही बहुत अच्छा हो गया। दादियों के छोटे से उत्तर में भी बड़ी सफलता का छिपा राज अनुभव हुआ। कम बोलना, धीरे बोलना, मधुर बोलना और सत्य बोलना ये हमने दादी से सीखा। कहते हैं कि महान व्यक्ति मरने के बाद भी जीवन्त रहता है। हमारी दादी भौतिक जगत से गई ज़रूर हैं लेकिन वें एक नये विशेष भगीरथ कर्तव्य प्रयाण के लिए गई हैं, न कि हमारे बीच से। वो आज भी हमारे साथ हैं, उनकी शिक्षा-दीक्षा हमारे साथ हमेशा रहेगी और हम भी उसे आत्मसात कर परमात्मा के कार्य को सम्पन्न और सम्पूर्ण करेंगे। ऐसी मीठी दादी जी को लौकिक से अलौकिक कार्य के लिए विदाई नहीं लेकिन बधाई देते हुए हमारे हृदय की गहराइयों से श्रद्धा सुमन अर्पित।



हमारा बाबा हम बच्चों को अभी दुःखी देख नहीं सकता है, हम लोग तो सुखी हो गए लेकिन दूसरे भी हमारे भाई-बहन जो दुःखी, अशांत हैं, चिंता व भय में हैं, कल क्या होगा इसी सोच में रहते हैं, उन्हीं को शान्ति का सहयोग दे करके उनको भी सुख-शान्ति का अनुभव कराना है। अब खुद शक्तिशाली बन मन्सा द्वारा औरों को भी शक्ति देना है, यह हमारा मूल कार्य है, इसी कार्य को करने में बिज्जी रहने से आप बहुत सहज मायाजीत बन सकते हैं क्योंकि माया पहले मन में संकल्प रूप में आती है फिर आगे



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

रोज मुरली से मन को होमवर्क दे करके व्यर्थ को समर्थ में चेंज करें...

बढ़ती है। तो अगर आपका मन ही सेवा में बिज्जी रहा तो माया के आने का रास्ता ही नहीं रहेगा इसलिए बाबा कहते मन्सा सेवा में रहने से एक तो हमारा मन बिज्जी रहता है। अन्तर्मुखी हो रहना माना अन्दर में रहना, बॉडी कॉन्सियस से परे रहना, जिससे माया नहीं आयेगी। दूसरा आस-पास में आपके शान्ति का वायुमण्डल का प्रभाव पड़ता है। तीसरा जो भी फाइनेल होना है वो अचानक होना है तो हर घड़ी मेरे लिए अटेन्शन देने की है। अचानक होना है तो एवरेडी रहना होगा क्योंकि अन्त मति सो गति होनी है। तो अचानक, एवरेडी और बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। हर सेकण्ड अटेन्शन दे

करके टेन्शन में नहीं जायें तो उनका बहुतकाल इकट्ठा हो सकता है। अगर अलबेले होंगे तो वो टाइम कट हो जाता है। इस समय हम सबको बाबा का वरदान है कोई ऐसे नहीं कहे कि हमको तो चांस है ही नहीं या हम तो अभी आये हैं...। इसमें जो ओटे सो अर्जुन, कोई भी मौका ले सकते हैं और जितना चाहो उतना पुरुषार्थ करके आगे बढ़ सकते हैं।

फिर बाबा कहते यह निश्चय रखो कल्प पहले भी मैं ही तो थी, इस कल्प में भी मैं ही हूँ और दूसरे कल्प में भी होंगी। मैं थी, मैं हूँ और मैं होंगी इतना निश्चय और नशा रखना चाहिए। जहाँ निश्चय है वहाँ विजय अवश्य

होती है। निश्चय की तो हमेशा विजय होती ही है, निश्चयबुद्धि विजयंति। तो हम सबको यह लक्ष्य रखना है कि मेरा बहुतकाल अभी है लेकिन अभी जो आये हैं तो पल-पल परमात्मा के प्यार में खोया हुआ हो। जहाँ प्यार होता है वो भूलना मुश्किल है, याद करना मुश्किल नहीं होता है। इन बहनों की बहुत अच्छी लाइफ है, बहुत आनंदमय रहते हैं, ऐसे बहनों द्वारा बाप के प्यार की आकर्षण में ही तो यहाँ आये हैं। तो परमात्म प्यार ऐसी चीज है जो आप परमात्मा को पसंद आ गये तब तो इन बहनों द्वारा अपना बना लिया। बाबा को हम पसंद आये और हमको बाबा पसंद आये। पसंद आ गया, प्यार हो गया फिर तो भूलने की बात ही नहीं। और कोई भी बात आवे जो आप नहीं समझ सकते हो, क्या करूँ, कैसे करूँ की स्थिति आवे... तो सच्ची दिल से 'मेरा बाबा' कहो तो बाबा हाज़िर होके आपको ऐसी प्रेरणा देगा जो बिल्कुल ही सहज जैसे हुआ ही पड़ा है। असम्भव भी सम्भव हो जायेगा क्योंकि परमात्मा का हाथ हमारे सिर पर है। हमारी दिल सच्ची और साफ है तो बाबा हमारा है, हम बाबा के हैं और है ही क्या? सच्ची और साफ दिल वाले को कब, क्या करना है, कैसे करना है वो टच करता है। समर्थ संकल्प है मुरली, वरदान, स्लोगन इसको कभी भी भूलो नहीं। रोज मुरली से मन को होमवर्क दे करके व्यर्थ को समर्थ में चेंज करने का पुरुषार्थ ज़रूर करना। इसके लिए मन का टाइमटेबल बनाना।

जब तक अटैचमेंट है तब तक सुखी रह नहीं सकते



राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुरली में ऐसा जादू भरा हुआ है, जो जादूगर की जादूगरी देख अजब लगता है। जादूगर क्या से क्या करते हैं, हम देखते ही रह जाते हैं। तो बाबा भी बहुत मशहूर जादूगर है। भक्ति में समझते थे कृष्ण जादूगर है, पर अनुभव कहता है शिवबाबा जादूगर है।

जवानों को बूढ़ा बना देता है, बूढ़ों को जवान बना देता है, यह कमाल है बाबा की। साहूकारों को गरीब बना देता है, साहूकार सेवा में लगाने में बिचारे गरीब हैं, सोचते रहते हैं और गरीब को बाबा साहूकार बना देता है वो पूछता रहता है बाबा आपकी सेवा में मैं क्या करूँ! उसका यज्ञ सेवा के लिए प्यार बहुत, वो गरीब नहीं है। बाबा के लिए वो शाहों का शाह, तीनों लोकों का मालिक है। बाबा कहता है मैं भी तीनों लोकों का मालिक नहीं हूँ, मेरे बच्चे तीनों लोकों के मालिक हैं। चाहे यहाँ रहें, चाहे सूक्ष्म वतन में रहें। बाबा ने इतना हल्का बना दिया है। बालक सो मालिक बनके रहने में मजा है। जो इनोसेन्ट बालक होते हैं उनसे खुशबू बहुत आती है। फूल की तरह खुशबूदार, ऐसे बालक जिसमें कोई भी विकार का अंशमात्र न हो। जैसे विकार का पता ही नहीं है, वो बड़े प्यारे लगते हैं। कोई हैं जो किसी भी जाति देश, धर्म, भाषा के हों लेकिन फूल प्यारा न लगता हो? फलों में है आम और फूलों में है गुलाब। बाबा फल भी प्रत्यक्ष फल देता है। जितना हम प्युअर बनते हैं उतना फूल मुआफिक बनते हैं, जितना खुश रहते हैं उतना फल बन जाते हैं। तो बाबा कैसा जादूगर है जो कांटे को फूल बना देता है।

बाबा कहते खुशी जैसी खुराक नहीं, चिन्ता जैसा मर्ज नहीं। एक-एक बोल लाखों की वैल्यू का है। माला भी हाथ में फेरने के लिए उठानी पड़ेगी। हमें तो केवल बाबा के बोल याद करने हैं बस, खुशी आ गयी। कौन-सा बोल? बच्चे रिमेम्बर मी, जी बाबा। बच्चे 63 जन्म विकर्म किये हैं, अब मुझे याद करो तो विनाश हो जायेंगे, जी बाबा। सबमें जी बाबा करना है। जो डिटेच होना नहीं जानता है वो लविंग कैसे होगा? जब तक अटैचमेंट है तब तक सुखी नहीं रह सकता है। लोहे की जंजीरें टूटी, सोने की जंजीरें अच्छी लगती हैं। बाबा का कन्याओं से कितना प्यार है, कन्याओं को बाबा का नाम बाला करना है। अच्छी स्टडी करनी है, अच्छा गुणवान बनना है। जो बाबा को अच्छा लगता है, वो करना है। जहाँ बाबा बिठाता है, वहाँ बैठना है। उसमें आजकल परीक्षा और कोई नहीं है। कोई आवाज़ से बात करता है तो दूसरा ढीला पड़ जाता है। अरे कुछ नहीं है, ड्रामा बड़ा मीठा है, सीख रहे हैं। किसकी नेचर को न याद करो, न याद कराओ, यह भी पाप के खाते में जायेगा। कर्म में नेचर को याद किया, हमारी भी नेचर ऐसी नाजुक बन गयी, तो विकर्म तो विनाश हुआ नहीं। भले समझता है मैं बुरा कर्म तो करता नहीं हूँ, पर नाजुक नेचर वाले में सहनशक्ति है नहीं तो श्रेष्ठ कर्म कर नहीं सकता। हमारी पढ़ाई है- पढ़ते जाओ, प्रैक्टिस करते जाओ, पास होते जाओ।

हम सभी प्यारे बाबा का हर मानव मात्र को शुभ सन्देश, शुभ पैगाम पहुंचाने वाले पैगम्बर अथवा संदेशी हैं। पैगम्बर कौन होता है? इस वैराइटी झाड़ में देखेंगे तो जो भी अपना-अपना धर्म स्थापन करके पैगम्बर बने हैं, वह आत्माएं अपने-अपने समय पर अपने प्यारे बाप के घर से डायरेक्ट आने के कारण सतोगुणी हैं। फिर पीछे चक्र में आते हैं लेकिन हम पैगम्बर उन सबसे निराले हैं। वे बाप के घर से मर्ज हुई आत्माएं आती हैं और हमें बाप सम्मुख में नॉलेज देकर पावन बना रहे हैं। बाप ने हमें सिर्फ नॉलेज नहीं दी लेकिन अपना बनाकर अधिकारी बनाया है, वर्सा दिया है। उन पैगम्बरों को तो कहा आप अपना-अपना पिल्लर खड़ा करो और हमें पैगम्बर बनाया कि तुम्हें सारे विश्व का नव निर्माण करना है। पुराने को खत्म कर नया करना है। सारी विश्व की आत्माओं को मुझ

राजयोगी, पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, हमारा योग ही सहयोग है। पवित्रता ही हमारा सहयोग है। यही हम बाप को नव निर्माण के लिए सहयोग देते हैं। हम नव निर्माण के आधार हैं। हमारे आधार पर ही सृष्टि का उद्धार होना है। दूसरा हम पैगम्बर हैं।

वह पैगम्बर आते हैं अपना धर्म स्थापन करने और हम कल्प के आदि में आये फिर जा रहे हैं। अभी हम ऐसी नींव डाल रहे हैं जो 21 जन्म तक हमारा मकान सदा सजा सजाया



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हमारा फाउंडेशन है बुद्धियोग और नींव है याद की यात्रा...

बाप को पैगाम देना है।

बाबा ने हम बच्चों को इस बेहद झाड़ की जड़ में राजयोगी बनाकर बिठाया है- नव निर्माण के लिए। याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। हमें सारे नव निर्माण की नींव पर रखा है। जब कोई मकान बनाते तो उसका पहला आधार नींव पर रहता है। जितना फाउंडेशन पक्का होगा उतना इमारत का प्लैन रखेंगे। वह पैगम्बर कोई मकान के फाउंडेशन नहीं, वह तो मरम्मत करने वाले हैं। लेकिन हमें तो नई दुनिया के नव निर्माण के लिए फाउंडेशन में बाबा ने अन्दर रखा है। हमारा बाबा है फाउंडर, उसने हमें फाउंडेशन में रखा है और कहा इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मजबूत करो।

एक तरफ हम नींव हैं, दूसरे तरफ हमें बाबा का पैगाम देना है कि बाप आया है- नव निर्माण करने। हमें बाबा ने सन्देशी बनाया है कि चारों तरफ मेरा सन्देश दो। एक तरफ हम

रहे। तो हरेक ऐसी अपनी जवाबदारी समझते हो कि हम इस जड़ में बैठे हैं। अपनी कूट-कूट कर नींव पक्की कर रहे हैं? हमारा फाउंडेशन है बुद्धियोग, नींव है याद की यात्रा। अगर हम नींव डालने वालों की बुद्धि भटकती है तो मकान का क्या होगा! अगर नींव डालने वाले, नींव डालते-डालते इधर-उधर चले जायें तो उस नींव का क्या होगा! हम सभी नींव में हैं, कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। हमें तो सर्विस की बहुत धुन है। लेकिन बुद्धि को बाहर भटकाते, तो वह नींव हिलेगी या मजबूत होगी? अगर नींव में बैठे-बैठे निकल जाते तो उसके लिए बाबा कहता- तुम्हें 100 गुणा दण्ड मिलेगा। अगर आज कोई कान्ट्रेक्टर लिखा-पढ़ी करके कान्ट्रेक्ट ले और पीछे धोखा दे तो उस पर केस चल जाता। आपने भी बाबा के लेजर में नाम लिखाया, फार्म भरा, अब कहो मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि फार्म भरा माना फंस गये। सोच कर फंसे ना! अच्छाई के लिए फंसे ना! बाप के प्यार में फंस गये।



अव्यक्त बापदादा से स्नेह मिलन मनाते हुए दादी रतनमोहिनी जी।



भारत के रक्षामंत्री माननीय राजनाथ सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी जी। साथ हैं अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय।



बिहार के राज्यपाल माननीय आरिफ मोहम्मद खान दादी जी से वार्तालाप करते हुए। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. लीला दीदी।



असम के मुख्यमंत्री डॉ. हेमंत विश्वकर्मा दादी जी से आशीर्वाद लेते हुए।



गुलबर्गा विश्व विद्यालय की तरफ से दादी जी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजते हुए।



प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी जी।



दादी जी को श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी। समूह चित्र में संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा व राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सुषमा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. शारदा दीदी तथा अन्य वरिष्ठ ब्र.कु. भाई-बहनें।



- पेज 1 का शेष...

ईटी पुट्टैया और रजिस्ट्रार प्रोफेसर चन्द्रकांत यतनूर के द्वारा राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी को डॉक्टरेट की मानद उपाधि से नवाजा गया। उन्हें यह उपाधि विशेष रूप से युवाओं और महिलाओं के आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक सशक्तिकरण में उनके योगदान के लिए प्रदान की गई। इसके अलावा देश-विदेश में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से समय प्रति समय दादी को सम्मानित किया गया है।

➤ देशभर से मीटिंग में पहुंचे भाई-बहनों ने दी श्रद्धांजलि अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका ब्र.कु. मुन्नी दीदी व ब्र.कु. संतोष दीदी, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा व डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, जयपुर सबजोन की निदेशिका ब्र.कु. सुषमा दीदी, ब्र.कु. शारदा दीदी, ब्र.कु. मनोरमा दीदी, प्रयागराज सहित देशभर से पहुंचे भाई-बहनों ने पुष्पांजलि अर्पित कर दादी के निमित्त योग किया।



पतंजलि योग गुरु बाबा रामदेव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. दादी जानकी व राजयोगिनी ब्र.कु. दादी रतनमोहिनी।



राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय भजनलाल शर्मा दादी जी से मुलाकात करते हुए।



शान्तिवन में आयोजित ग्लोबल समिट कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, वरिष्ठ भाजपा नेता लालकृष्ण अडवाणी, संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. मृत्युंजय व ब्र.कु. अमीरचंद।



सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस दीपक शर्मा को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी जी। साथ हैं राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय तथा अन्य।



भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटिल जी से मुलाकात करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी तथा अन्य।



किंग्सवे कैप-दिल्ली। माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता से मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम दीदी, शालीमार बाग, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तारा बहन। साथ हैं ब्र.कु. प्वाइंट बहन तथा अन्य।



अम्बाला-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नारी सशक्तिकरण की प्रत्यक्ष उदाहरण स्वरूप राजयोगिनी ब्र.कु. कृष्णा दीदी की प्रथम पुण्यतिथि पर दयाल बाग द्वारा खुखैरन भवन में आयोजित कार्यक्रम में हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए पंजाब जोन निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. उत्तरा दीदी, पंजाब जोन निदेशिका एवं राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, अंबाला सबजोन निदेशिका।



फर्रुखाबाद-बीबीगंज(उ.प्र.)। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् परमात्म स्मृति में विधायक सुशील शाक्य, श्रीमती भारती मिश्रा, राष्ट्रीय कवि, पीठाधीश्वर स्वामी ईश्वरदास जी महाराज, जिलाधिकारी आशुतोष द्विवेदी, एसडीएम गजराज सिंह, सुरेश चन्द्र गोयल, रोहित गोयल, अध्यक्ष युवा व्यापार मण्डल, ब्र.कु. गिरिजा, ब्र.कु. मंजू तथा अन्य।



कृष्णा नगर-भरतपुर(राज.)। ब्रह्माकुमारी संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी के चतुर्थ पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् समूह चित्र में आगरा सबजोन की सह प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. कविता दीदी, डॉ. योगेन्द्र सिंह, पशुपालन विभाग के पूर्व निदेशक, सत्यनारायण शर्मा, पूर्व जनरल मैनेजर पीएनबी, ब्र.कु. पावन बहन, ब्र.कु. संस्कृति, भुसावर, ब्र.कु. रजनी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



मोहन नगर-आगरा(उ.प्र.)। डॉ. मुकेश गोयल, ऑनर गोयल हॉस्पिटल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विनीता। साथ उपस्थित हैं हेल्थ एजुकेशन ऑफिसर चक्रवीर जी, ब्र.कु. शोभा, राजवीर, आर्मी सूबेदार एवं ब्र.कु. सुरेश।



हिसार-हरियाणा। पीस पैलेस, बालसमंद रोड ब्रह्माकुमारी संस्था के स्वर्ण जयंती कार्यक्रम में उपस्थित रहे भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, माननीय राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय, कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा, विधायक श्रीमती सावित्री जिंदल, ब्रह्माकुमारी संस्था के अतिरिक्त महासचिव राजयोगिनी ब्र.कु. मृत्युंजय, पंजाब जोन ईंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. उत्तरा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. नथमल, ब्र.कु. लीना दीदी, हिसार सर्कल ईंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. रमेश दीदी तथा अन्य।

साइलेंस... एक पॉवरफुल मेडिसिन

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि नाहाजिर रहने पर भी केस जीत गए तो क्या कहेंगे? बाबा ने किया। यही कहते हैं ना कि बाबा ने किया। लेकिन कैसे किया बाबा ने? सर्वधर्म परित्यज्य, एक बाबा की शरण में आये तब बाबा ने काम किया। अब आगे पढ़ेंगे...

अब अठारहवें अध्याय में सर्व धर्म लेकिन कोई नहीं सोच पाता कि जब उस जमाने में महाभारत के समय ना मुस्लिम थे, ना सिक्ख थे, ना ईसाई थे फिर भगवान



राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

कीचड़ भी ठहर नहीं सकता। तो इसी तरह शुरू में जब हम बाबा के पास आते हैं तो कमल की तरह। रहना सबके बीच में है, बैलेंस से चलना है। उनका कीचड़ हमारे पर न लगे। इतना न्यारा और प्यारा होकर रहना है।

लेकिन फिर कमल के साथ-साथ पुरुषार्थ है हमारा गुलाब बनने का। गुलाब जो है ना वो भले जैसे कहा कि खाद से वो खुशबू देता है, कांटों के बीच में रहता है लेकिन एक गुलाब जब सम्पूर्ण खिल जाता है, खिलने के बाद उसकी

कर्म और परमार्थ दोनों का बैलेंस जरूरी...

ने कौन से धर्म की बात कही? ये कोई सोचता ही नहीं है। लेकिन हर इंसान के कितने धर्म हैं जिसके प्रति वो प्रतिबद्ध है। अगर वो कमिटमेंट मेरा पहला बाबा के साथ हो तो कहेंगे कि हाँ पहला धर्म मैंने बाबा के साथ निभाया। तो बाकी के धर्म को बाबा सम्भाल लेता है। इसलिए गीता में सफलता का सूत्र बताया सर्वधर्म परित्यज्य, मामेकम शरणम रज। तब सफलता सहजता से अनुभव होगी और ये स्वीट साइलेंस का जो सुकून मिलता है वो तभी मिलेगा। लेकिन इसका मतलब ये भी नहीं है कि लाइफ में इम्बैलेंस करें।

कर्म और परमार्थ दोनों का बैलेंस लेकर चलना है। व्यवहार और परमार्थ दोनों का बैलेंस लेकर चलना है। बैलेंस जीवन में

बहुत जरूरी है। ये धर्मों को भी निभाने में बैलेंस बहुत जरूरी है। सर्व सम्बन्ध हमारे बाबा के साथ हों। लेकिन दुनिया के साथ जो सम्बन्ध निभाने का बैलेंस है वो भी हमें मेंटें करते हुए चलना है। ये नहीं कि नहीं अभी छोड़ दो इन सबको। छोड़ना भी नहीं है, इसीलिए हमेशा मिसाल दिया जाता है- एक तो कमल पुष्प, दूसरा गुलाब का पुष्प। पहला क्या बनना है? गुलाब के पुष्प और कमल के पुष्प में क्या अंतर है? लेकिन पहला क्या बनना है कमल या गुलाब? अच्छा कैसे बनेंगे गुलाब? कमल का इसलिए कहा क्योंकि कमल की गृहस्थी बहुत बड़ी होती है। लेकिन उसके बावजूद भी न्यारा है और उसकी पंखुड़ियां इतनी कोमल कि कोई

पंखुड़ियां झड़ जाती हैं, वो पंखुड़ियां छोड़ देता है लेकिन कमल पंखुड़ियां छोड़ता नहीं है। वो न्यारा-प्यारा जरूर है, अपनी पंखुड़ियों पर कीचड़ लगने ही नहीं देता है। नीचे हो जाता है। तो पहले कमल होते हैं, कमल बनते हैं और फिर कमल के बाद हमारा पुरुषार्थ है गुलाब बनने का। जो एकदम ऐसे न्यारे हो जायें धीरे-धीरे सारी रेस्पॉन्सिबिलिटी को भी हमने निभाकर उसको भी पूरा कर सम्पन्न कर दिया। किसी को नाराज भी नहीं किया। सम्पूर्ण खिला हुआ रहे। अपनी खुशबू भी फैलाई। लेकिन सम्पूर्ण खिल करके सारी पत्तियों को झड़ करके बीच का जो बुर रह गया माना अशरीरी हो गया। तो ये स्वीट साइलेंस है।

-क्रमशः-



बलंगा-हरिपुर रोड(ओडिशा)। ब्रह्माकुमारी के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ओडिशा राज्य की उप मुख्यमंत्री श्रीमती प्रवती परिदा, धार्मिक प्रभाग के जातीय संयोजक राजयोगिनी ब्र.कु. रामनाथ, माउंट आबू, दिव्यांग सेवा के जातीय संयोजक ब्र.कु. सूर्यमणि, माउंट आबू, ब्रह्माकुमारी भुवनेश्वर उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. लीना दीदी, ब्र.कु. हुमिला, ब्र.कु. मीरा भाई तथा अन्य।



गुरुग्राम-हरियाणा।

सीआरपीएफ गुरुग्राम द्वारा प्लास्टिक थैलियों के इस्तेमाल के खिलाफ जागरूकता विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में आशीष कुमार झा, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्र.कु. सुदेश तथा अन्य।



ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

जितना सोचेंगे...उतना परिस्थिति हमारे ऊपर हावी होगी...

से नहीं आती है।

मैं कहीं जा रही थी तो हमारे सामने वाली सीट पर एक भाई बैठे थे, जो लगातार अपने फोन को स्कॉल कर रहे थे। तो हमने पूछा आप क्या कर रहे हैं? उन्होंने जवाब दिया कि हमारे ऑफिस में आग लग गई है और सारा सामान जल गया है। मैंने उनका चेहरा देखा और पूछा कि आप ठीक हैं? तो उन्होंने कहा हां, ऑफिस जला है, लेकिन सबकुछ ठीक है। कितनी अच्छी बात है ना। उनका ऑफिस पूरा जल गया था, लेकिन मन पर जलन का असर नहीं था। तो मन की स्थिति ने क्या किया कि परिस्थिति के ऊपर मन की स्थिति हावी हुई। और अगर ध्यान नहीं रखा तो मन की स्थिति पर परिस्थिति हावी होती है। जब मन की स्थिति परिस्थिति पर हावी होती है तो हम जीत जाते हैं। कहा भी जाता है- मन जीते जग जीते। हम उल्टा चलते हैं। हम कहते हैं सबकुछ जब मेरे अनुसार होगा तो हम खुश होंगे। मतलब पहले जग पर जीत पाएंगे फिर मन पर जीत पाएंगे।

अपना एक हाथ आगे करो और देखो कि हाथ में दर्द हो रहा है। यह एक परिस्थिति है। सुबह आप उठे ये बिल्कुल सुन्न, हाथ में

बहुत दर्द हो रहा है। इसको अनुभव करो। ये परिस्थिति है। जब ये हाथ पूरा दर्द हो रहा है तो क्या मन भी दर्द होगा? आप अनुभव करके देखो तो पता चलेगा। हाथ दर्द होगा तो क्या मन में भी दर्द होगा? नहीं। मन में कब दर्द होगा, जब हम ये सोचने लगेंगे कि हमारे हाथ में यहां दर्द हो रहा है। जब तक आप सोचेंगे नहीं तब तक मन में दर्द नहीं हो सकता। लेकिन जब आपने सोचना शुरू किया कि क्यों दर्द हो रहा है, क्या हुआ, मुझे कैसे हो गया, अब आगे क्या होगा, तब सर में दर्द शुरू हो जाएगा। जब हाथ में दर्द हो रहा था तब मन में दर्द नहीं होगा। जब सोचने लगेंगे तब होगा। फिर चिंता होने लगेगी, घबराएंगे, डरेंगे तो जो हाथ का दर्द है वो और बढ़ जाएगा।

ये परिस्थिति है और यह मन की स्थिति है। परिस्थिति ठीक नहीं है। मन की स्थिति पर परिस्थिति का असर नहीं पड़ता। मन की स्थिति पर कब असर पड़ता है? जब हम परिस्थिति के बारे में सोचना शुरू करते हैं। लेकिन जब मन की स्थिति पर असर पड़ता है तो मन की स्थिति का असर परिस्थिति पर पड़ना शुरू हो जाता है। तो कौन शक्तिशाली हुआ- परिस्थिति या मन की स्थिति?



मजलिस पार्क-दरियापुर(दिल्ली)। शिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् नवनिर्वाचित कैबिनेट मंत्री रविंद्र इंद्राज सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी दीदी,मजलिस पार्क, ब्र.कु. शारदा,स्वरूप नगर तथा अन्य।



पूर्णिया-बिहार। शिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् समूह चित्र में विधायक विजय खेमका, मेयर विभा कुमारी, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विवेकानंद सिंह, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मुकुट मणि, ब्र.कु. प्रेम,माउंट आबू, समाजसेवी एवं उद्योगपति विशिष्ट शर्मा।



मैनपुरी-उ.प्र.। नवनिर्वाचित भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती ममता राजपूत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अवन्ती।



पांडव भवन-करोल बाग(दिल्ली)। राजयोगिनी गुल्जार दादी के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में पुष्पांजलि अर्पित करने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी,निदेशिका,पांडव भवन,करोल बाग,दिल्ली, ब्र.कु. विजय बहन, रोहित जी,ईश्वरेंस सेक्टर कंसल्टेंट व ऑनर,रोहित कुमार एंड कंपनी, डॉ. आलोक,जनरल सर्जन एवं किम्मी कलाकारा बहन,सिविल जज,गुडगांव।



कूचबिहार-पश्चिम बंगाल। होली पर्व के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सम्पा बहन, चन्द्रानी जी,समाज सेविका व हाई स्कूल अध्यापिका, सुब्रत जी,आरएसएस प्रमुख, एडवोकेट नबनीता जी, सुब्रत जी,आईबी इंस्पेक्टर, राज गुप्ता,श्रीराम फाइनैस मैनेजर, तपन जी,उद्योगपति तथा अन्य।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk



BANK NAME:- INDIAN BANK

BRANCH:- Shantivan, Talhati

ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF

ACCOUNT NO:- 7552337300,

IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,

पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org



सासनी-हाथरस(उ.प्र.)। मधुमेह दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए क्षेत्रीय आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी डॉ. नरेन्द्र कुमार, जिला स्वास्थ्य अधिकारी चतुर सिंह, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. दलवीर सिंह, सासनी, सीएचओ ज्योति जी, ब्र.कु. शांता दीदी, ब्र.कु. राज, ब्र.कु. दुर्गेश, ब्र.कु. उमा तथा अन्य।



मकनपुर-गाज़ियाबाद(उ.प्र.)। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् निगम पार्षद राधे श्याम त्यागी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा बहन। साथ हैं ब्र.कु. नीलम एवं ब्र.कु. ममता।



जमशेदपुर-झारखंड। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भगवान, माउंट आबू। मंचासीन हैं हवलदार सिताराम, घाघीडीह केन्द्र कारा करनडीह, ब्र.कु. रागिनी, जुगसलिया।

स्वास्थ्य



कम हो सकती हैं। क्योंकि यह पानी आपके शरीर में हार्मोन को बैलेंस करता है। साथ ही शरीर में मौजूद गंदगी को बाहर करता है, जिससे आपके चेहरे पर चमक आ सकती है।

दिल को रखे स्वस्थ...

जीरा, धनिया और सौंफ के पानी का सेवन करने से दिल को स्वस्थ रखा जा सकता है। दरअसल, इसमें फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में मौजूद होते हैं, जो कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं। इसके नियमित सेवन से दिल की बीमारियों को जोखिम कम हो सकता है।

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी कैसे बनाएं?

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी बनाने के लिए सबसे पहले एक पैन में एक गिलास पानी गर्म कर लें। अब इसमें एक चम्मच जीरा, एक चम्मच धनिया और

जीरा, सौंफ, धनिया का इस तरह करें सेवन



शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हम न जाने कितने ज़्यादा प्रयास करते हैं। दिनभर खानपान से लेकर वर्कआउट का ध्यान रखते हैं, ताकि खुद को हेल्दी और फिट रख सकें। खासतौर पर हममें से कई लोग अपने बढ़ते वजन से परेशान होने के बाद घंटों एक्सरसाइज और खानपान पर स्ट्रिक्ट रूप से ध्यान देना शुरू कर देते हैं लेकिन ऐसा करने से आपके शरीर पर कई बार विपरीत असर भी पड़ता है। इसलिए एक सही डाइट की जरूरत होती है। खासतौर पर अपने शरीर में मौजूद गंदगी को क्लीन करना बहुत ही जरूरी होता है। अगर आप चाहते हैं कि आपका वजन सही रहे और आप फिट और हेल्दी रहें, तो जीरा, सौंफ और धनिया से तैयार

पानी का सेवन करें। यह एक ऐसा मिश्रण है जो आपके शरीर की कई समस्याओं को कम कर सकता है। आइए जानते हैं जीरा, सौंफ, धनिया का पानी पीने से सेहत को क्या लाभ हो सकते हैं...

बॉडी को डिटॉक्स करें...

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी शरीर को डिटॉक्स करने में मदद कर सकता है। रोजाना सुबह खाली पेट इसका सेवन करने से शरीर में जमा गंदगी और टॉक्सिंस बाहर निकल जाते हैं। यह लिवर और किडनी को हेल्दी रखने में मदद करता।

पाचन में सुधार करें...

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी पीने से पाचन तंत्र दुरुस्त होता है। इसमें मौजूद पोषक तत्व पाचन क्रिया को बेहतर करने में मदद करते हैं। इसका सेवन करने से कब्ज, गैस, अपच और एसिडिटी जैसी पाचन संबंधी समस्याओं से राहत मिल सकती है। सुबह खाली पेट इसका सेवन करने से गट हेल्थ में सुधार होगा।

वजन घटाने में मददगार...

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी पीने से वजन घटाने में मदद मिल सकती है। दरअसल, इसके सेवन से मेटाबॉलिज्म बूस्ट होता है, जिससे शरीर में जमा अतिरिक्त फैट को तेजी से बर्न करने में मदद मिलती है। इसके नियमित सेवन से

धीरे-धीरे वजन कम होने लगेगा।

इम्युनिटी बूस्ट करें...

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी पीने से इम्युनिटी बूस्ट हो सकती है। दरअसल, इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण मौजूद होते हैं, जो इम्युनिटी को मजबूत करने में मदद करते हैं। इसके सेवन से आप सर्दी, जुकाम, वायरल और बैक्टीरियल संक्रमणों से बचाव में मदद मिल सकती है।

स्किन की परेशानियां...

जीरा, सौंफ और धनिया से तैयार पानी पीने से आपकी स्किन संबंधी परेशानियां

एक चम्मच सौंफ डालकर उबालें। इसे तब तक उबालें, जब तक पानी आधा न रह जाए। उसके बाद इस पानी को एक कप में छान लें और इसका सेवन करें। या फिर आप इन तीनों चीजों को रातभर भिगोकर भी सुबह इसका पानी इसी विधि से बना सकते हैं।

जीरा, धनिया और सौंफ का पानी स्वास्थ्य के लिए कई तरह से लाभकारी हो सकता है। हालांकि, अगर आपकी परेशानी काफी ज़्यादा बढ़ रही है तो इस स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूर लें।



बेगूसराय-बिहार। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर जीडी कॉलेज के मैदान में आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए बिहार व झारखंड की क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी। मंचासीन हैं बॉलीवुड के प्रसिद्ध गायक हरीश मोयल, फिल्म जगत के दादा साहब फाल्के अकादमी पुरस्कार से सम्मानित चांद मिश्रा, मेयर पंकि देवी, डिप्टी मेयर अनीता राय, बरौनी रिफाइनरी के ईडी सत्य प्रकाश, सेंट जोसेफ स्कूल के निर्देशक अभिषेक कुमार, पूर्व एमएलसी रजनीश कुमार तथा अन्य।



भादरा-राज। होली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए कथा वाचक संगीतकार उपेन्द्र पांडेय, सादुलपुर। मंचासीन हैं ब्र.कु. चंद्रकांता बहन, ब्र.कु. शोभा, सादुलपुर, ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. भगवती तथा अन्य।



ओक्लाहोमा-यूएसए। ब्रह्माकुमारीज ओक्लाहोमा सिटी सेंटर व संयुक्त राष्ट्र संघ ओक्लाहोमा सिटी चैप्टर के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित 'एक साथ उठना: महिला मुक्ति और सशक्तिकरण के लिए एकत्र होना' विषयक कार्यक्रम में ब्र.कु. बिन्दु बहन को ओक्लाहोमा राज्य से आधिकारिक प्रशस्ति पत्र प्रदान कर 2025 के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की महिला राजदूत के रूप में मान्यता दी गई। जिसके पश्चात् समूह चित्र में अन्य गणमान्य महिलाएं।



मिलपिटस-यूएसए। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नारी-महिलाओं का उत्सव कार्यक्रम में इंडो अमेरिकन एसोसिएशन के सहयोग से सैन फ्रांसिस्को में भारत के महावाणिज्य दूतावास द्वारा सामुदायिक सेवा के प्रति समर्पण और सकारात्मक बदलाव लाने में असाधारण नेतृत्व के लिए एक 'अग्रणी महिला' के रूप में ब्र.कु. कुसुम को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं डॉ. श्रीकर रेड्डी और धर्मपत्नी प्रतिमा रेड्डी, सैन फ्रांसिस्को, सैन फ्रांसिस्को स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास की पत्नी प्रथिमा कोणुला, कैलिफोर्निया के अर्टोनी जनरल, वकील, राजनीतिज्ञ रॉब बोन्टा तथा अन्य।



रोसड़ा-बिहार। बिहार की प्रसिद्ध गायिका सह फिल्म अभिनेत्री सुश्री देवी को ओमशान्ति मीडिया व ज्ञानामृत पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. कुंदन बहन।



भागवत प्राप्ति सभी को रास आती है लेकिन उसका रस लेने के लिए ज्ञान और शिक्षा की सम्पूर्ण धारणा अति आवश्यक है। परमात्मा को पूरी तरह से समाने वाली, अपने अन्दर समाकर सहज तरीके से अपने चेहरे और चलन से सभी को वही परमात्म अनुभूति कराने वाली, हमारी अति स्नेही आदि रत्न और इस जहान में चलते-फिरते फरिश्ते की झलक और उसका प्रतिबिम्ब हम सबके ऊपर पड़े वो अनुभव उन्हीं के कमल मुख द्वारा हम आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि आप भी परमात्म सुख को एक फिल्म की भांति अनुभव करते जाएं और कहें कि सब में यही जहान के नूर हैं...

बाबा का मात-पिता के सम्बन्ध में, कम्बाइंड स्वरूप में साक्षात्कार हुआ। ऐसे देखा जैसे कापूस होती उसका धरती से आकाश तक लाइट का आकार, मात-पिता का कम्बाइंड स्वरूप बहुत प्यारा लगा। उसमें बहुत आकर्षण था। लगातार तीन दिन तक साक्षात्कार होता रहा। बाबा के साथ-साथ कभी श्रीकृष्ण और कभी श्रीविष्णु का साक्षात्कार होता रहा।

में हैं। मैं सात बहनों में छठवें नम्बर की थी। जब ज्ञान में आई तो तेरह वर्ष की थी और नौवीं क्लास में पढ़ती थी, आठ वर्ष से भक्ति करती थी। इसका एक कारण था कि एक ज्योतिष ने कह दिया कि ये रहेगी नहीं, माना कि शरीर छोड़ देगी इसलिए यज्ञ-तप करो। इसके कारण मैं परमात्मा से मात-पिता के सम्बन्ध से बातें करती थी और बड़ा प्यारा लगता था। कहती थी मैं तेरी योगिन बनूंगी, और योगिन बनने की चाहना भी बहुत थी। फिर हमारे घर में एक घटना घटी। जिसमें मेरा एक भाई जिसकी शादी होनी थी उसने पहले ही शरीर छोड़ दिया, जिसके



पंजाब का शेर दादी चंद्रमणि...

दादी कहती है आप सबने तो भागवत सुना होगा, तो गीता भी पढ़ी होगी। अगर अन्तर नहीं पता तो भागवत में भगवान की लीला और चरित्र का गायन होता है और गीता में ज्ञान और शिक्षा मिलती है। तो हमें परमात्मा ने

भागवत भी सुनाई और साथ में गीता भी पढ़ाई। माना भगवान की लीला सुनने का और भागवत के साथ ज्ञान दोनों अगर इकट्ठे हों तो आपको अपने भाग्य का पता चलेगा, क्योंकि लीला सुनने में बहुत मजा आता लेकिन गीता

का ज्ञान अकेले आपको सुकून नहीं देगा।

हमारे लौकिक परिवार में सात बहनों और एक भाई हैं। बाबा हमेशा हमको कहते थे भक्ति का फल तो ज्ञान मिलता है और हमारे लौकिक परिवार

में भक्ति जबरदस्त थी। हम पूजा-पाठ करने के बाद ही भोजन करते थे। आप सबको एक बात सुनाते हैं कि हमने जो भागवत और गीता पढ़ी आज भी हम उसका प्रैक्टिकल अनुभव करते हैं। और एक नशे की बात सुनाते हैं, कईयों ने अपने मात-पिता को छोड़ दिया और कईयों को मात-पिता ने छोड़ दिया लेकिन हमारे मात-पिता, हमारा सारा परिवार, मात-पिता सहित सब समर्पित हो गए। साथ में जो परिवार के सदस्य कोई बच गया वो सब आज भी अच्छे सम्बन्ध सम्पर्क

कारण माँ को बहुत दुःख हुआ, उसी समय मेरी लौकिक बहन के पति ने भी शरीर छोड़ दिया। और उसी रात्रि बाबा का मात-पिता के सम्बन्ध में, कम्बाइंड स्वरूप में साक्षात्कार हुआ, ऐसे देखा जैसे कापूस होती है उसका धरती से आकाश तक लाइट का आकार, मात-पिता का कम्बाइंड स्वरूप बहुत प्यारा लगा, जिसमें बहुत आकर्षण था। लगातार तीन दिन तक साक्षात्कार होता रहा। बाबा के साथ कभी श्रीकृष्ण और कभी श्रीविष्णु का साक्षात्कार होता रहा।

- क्रमशः



पूरनपुर-
पीलीभीत(उ.प्र.)
। नशा मुक्त भारत अभियान के अन्तर्गत ग्राम कबीरपुर कसगंजा में रैली निकाल ग्रामवासियों को नशा मुक्त होने का संदेश देते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें।



फिरोजपुर-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में अरुणा जी, मैनेजर रेलवे कॉर्पोरेटिव सोसाइटी, ब्र.कु. शर्मिष्ठा, ब्र.कु. डिंपल तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

खुशखबरी...

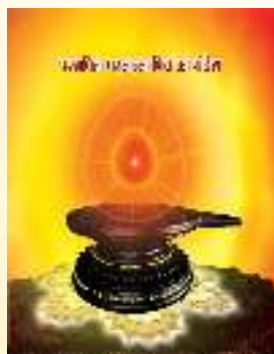
आ गई शिव संदेश और राजयोग कॉमेन्ट्री की नई कुंजी...



हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको

परमात्मा के बारे में बताया जाये, तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक जेबी किताब या पॉकेट बुक

डिजाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया, शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।



पीस पैलेस-जयपुर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज के पीस पैलेस में आयोजित महिला दिवस पर मूल्यनिष्ठ स्वस्थ, सुखी समाज के राष्ट्रीय निर्माण में महिलाओं की भूमिका विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. मीना, अनसंग स्टार ट्रस्ट के संस्थापक वी वुमन और अंतिम रायट एक्टिविस्ट मिस भाग्यश्री सैनी, जयपुर नगर निगम हेरिटेज संतोष अग्रवाल, मणिपाल विश्वविद्यालय के प्रो. डॉ. प्रभा दीक्षित तथा अन्य।



पंचवटी कॉलोनी-पटना। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सहारा वृद्धाश्रम में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् वृद्धाश्रम के कोऑर्डिनेटर कृष्ण को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रानी।

ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज,
आनंद भवन, शांतिवन, आबू रोड(राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org

परमात्म ऊर्जा



वर्तमान समय चारों ओर के पुरुषार्थियों के पुरुषार्थ में मुख्य दो बातों की कमजोरी व कमी दिखाई देती है, जिस कमी के कारण जो कमाल दिखानी चाहिए वह नहीं दिखा पाते, वह दो कमियां कौन-सी हैं? एक तरफ अभिमान, दूसरी तरफ है अनजानपन। यह दोनों ही बातें पुरुषार्थ को ढीला कर देती हैं। अभिमान भी बहुत सूक्ष्म चीज है। अभिमान के कारण कोई ने जरा भी कोई उन्नति के लिए इशारा दिया तो सूक्ष्म में न सहनशक्ति की लहर आ जाती है व संकल्प आता है कि यह क्यों कहा? इसको भी अभिमान सूक्ष्म रूप में कहा जाता है। कोई ने कुछ इशारा दिया तो उस इशारे को वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए उन्नति का साधन समझकर उस इशारे को समा देना व अपने में सहन करने की शक्ति भरना - यह अभ्यास होना चाहिए।

सूक्ष्म में भी वृत्ति व दृष्टि में हलचल मचती है- क्यों, कैसे हुआ? इसको भी देही अभिमान की स्टेज नहीं कहेंगे। जैसे महिमा सुनने के समय वृत्ति व दृष्टि में उस आत्मा के प्रति स्नेह की भावना रहती है, वैसे ही अगर कोई शिक्षा का इशारा देते हैं तो उसमें भी उसी आत्मा के प्रति ऐसे ही स्नेह की, शुभचिन्तक की भावना रहती कि यह आत्मा मेरे लिए बड़ी से बड़ी शुभचिन्तक है, ऐसी स्थिति को कहा जाता है देही अभिमान। अगर देही अभिमान नहीं है तो दूसरे शब्दों में अभिमान कहेंगे। इसलिए अपमान को सहन नहीं कर पाते। और दूसरे तरफ है बिल्कुल अनजान, इस कारण भी कई बातों में धोखा खाते हैं। कोई अपने को बचाने के लिए भी अनजान बनता है, कोई रियल भी अनजान बनता है। तो इन दोनों बातों के बजाए स्वमान

जिससे अभिमान बिल्कुल खत्म हो जाए और निर्माण, यह दोनों बातें धारण करनी हैं। मन्सा में स्वमान की स्मृति रहे और वाचा में, कर्मणा में निर्माण अवस्था रहे तो अभिमान खत्म हो जाएगा। फिलॉस्फर हो गए हैं लेकिन स्पिरिचुअल नहीं बने हैं अर्थात् यह स्पिरिट नहीं आई है तो जो आत्मिक स्थिति में, आत्मिक खुमारी में रहते हैं- इसको कहा जाता है स्पिरिचुअल। आजकल फिलॉस्फर ज़्यादा दिखाई देते हैं, स्पिरिचुअल पॉवर कम है। स्पिरिट एक सेकण्ड में क्या से क्या कर दिखा सकती है! जैसे जादूगर एक सेकण्ड में क्या से क्या कर दिखाते हैं, वैसे स्पिरिचुअलिटी वाले में भी कर्तव्य की सिद्धि आ जाती। उनमें हाथ की सिद्धि होती है। यह है हर कर्म, हर संकल्प में सिद्धि स्वरूप।

सिद्धि अर्थात् प्राप्ति। सिर्फ प्वाइंट्स सुनना-सुनाना- इसको फिलॉस्फर कहा जाता है। फिलॉस्फी का प्रभाव अल्पकाल का पड़ता है, स्पिरिचुअलिटी का प्रभाव सदा के लिए पड़ता है। तो अभी अपने में कर्म की सिद्धि प्राप्त करने के लिए रूहानियत लानी है। अनजान बनने का अर्थ है कि जो सुनते हैं उसको स्वरूप तक नहीं लाते हैं। योग्य टीचर उसको कहा जाता है जो अपने शिक्षा स्वरूप से शिक्षा देवे। उनका स्वरूप ही शिक्षा सम्पन्न होगा। उनका देखना-चलना भी किसको शिक्षा देगा।

जैसे साकार रूप में कदम-कदम, हर कर्म शिक्षक के रूप में प्रैक्टिकल में देखा। जिसको दूसरे शब्दों में चरित्र कहते हो। किसको वाणी द्वारा शिक्षा देना तो कॉमन बात है लेकिन सभी अनुभव चाहते हैं। अपने श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से अनुभव कराना है।

गर्मी से झुलसता रेगिस्तान, सूरज की तपिश से तपता हुआ। दूर क्षितिज पर कुछ नुकीले सिंहासन नज़र आते हैं, मानों रेत के बीच राजाओं का दरबार लगा हो। ये हैं मिस्र के पिरामिड, हजारों सालों से रेगिस्तान की कहानियों को अपने सीने में समेटे हुए।

आज रात चांद पूरा था और उसकी रोशनी पिरामिडों पर बिखर रही थी। एक युवा पुरातत्वविद, अली, इन प्राचीन संरचनाओं के रहस्य को सुलझाने के जुनून में वहाँ खड़ा था। वह मानता था कि पिरामिडों के अंदर कोई गुप्त कक्ष है, जिसके बारे में दुनिया को अभी तक पता नहीं चला है।

अपने साथी ओम के साथ उसने पिरामिड के एक छिपे हुए द्वार को ढूँढ निकाला था। थोड़ी देर हिचकिचाने के बाद, वे दोनों मशाल जलाकर उस अंधेरे द्वार से अंदर चले

कथा सरिता



मुस्कुराए। रेगिस्तान के राज को सुलझाने का सिलसिला अभी तो शुरू हुआ था।

अली और ओम उत्सुकता से खुले हुए द्वार से नीचे उतरे। सीढ़ियाँ उन्हें एक लंबे गलियारे में ले गईं। गलियारे की दीवारों पर मशालों का सहारा लेकर चलते हुए उन्हें मिस्र के देवी-देवताओं के चित्र दिखाई दिए। कुछ दूर चलने के बाद गलियारा एक और कक्ष में खुल गया।

यह कक्ष पिछले वाले से बिल्कुल अलग था। चारों तरफ किताबें रखी हुई थीं, जिनके पन्ने किसी अज्ञात भाषा में लिखे हुए थे। कमरे के बीचों-बीच एक मेज पर एक ग्लोब रखा था, जो किसी जादुई क्रिस्टल से बना हुआ लग रहा था। जैसे ही अली ने उस ग्लोब को छुआ, कमरे में रोशनी फैल गई और दीवारों पर नक्शे उभर आए।



रहस्यमयी पिरामिड

गए। भीतर का रास्ता संकरा और घुमावदार था। हर कदम पर उन्हें लगता था कि कोई उन्हें देख रहा है। दीवारों पर अजीबोगरीब चित्र बने हुए थे, जिनमें वे समझ नहीं पाए। काफी दूर चलने के बाद रास्ता एक बड़े कक्ष में खुल गया।

कक्ष के बीचों-बीच एक सुनहरा ताबूत रखा हुआ था। अली और ओम सांस रोके ताबूत के पास गए। ताबूत खोलने में उन्हें थोड़ी देर लगी, लेकिन आखिरकार वो पल आ गया। ताबूत के अंदर उन्हें सोने का मुकुट पहने एक फिरौन की मूर्ति मिली। उसके हाथों में एक सोने का पाषाण था, जिसपर अजीब निशान बने हुए थे।

पाषाण को ध्यान से देखने पर उन्हें लगा कि ये निशान किसी नक्शे का हिस्सा हैं। शायद ये पिरामिड के किसी गुप्त कमरे का रास्ता बताते हैं। अचानक, कक्ष की दीवारों पर अंकित चित्र चमक उठे और कमरे के फर्श में एक छिपा हुआ द्वार खुल गया।

अली और ओम एक-दूसरे को देखकर

नक्शे में तारामंडल, नदियाँ, पहाड़ और कुछ अपरिचित शहर दिखाई दे रहे थे। अली को लगा कि यह कोई खजाने का नक्शा हो सकता है। उसी समय, ग्लोब के ऊपर से एक आवाज़ गूँजी। आवाज़ धीमी और गंभीर थी।

“स्वागत है, खोजियों। क्या तुम प्राचीन मिस्र के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तैयार हो?”

अली और ओम चौंक गए। यह फिरौन की आत्मा थी, जो हजारों साल बाद भी इस कक्ष की रक्षा कर रही थी। अली ने हिम्मत जुटाकर जवाब दिया, “हाँ, हम प्राचीन मिस्र के ज्ञान को सीखने और दुनिया के सामने लाने के लिए तैयार हैं।”

फिरौन की आत्मा मुस्कुराई, तो लो, यह ज्ञान तुम्हारा है। लेकिन इसे संभालना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।” फिर अचानक रोशनी कम होने लगी और आवाज़ भी धीमी पड़ गई। आखिरकार, सबकुछ शांत हो गया। अली और ओम ने रेगिस्तान के राज को तोड़ दिया था, प्राचीन मिस्र के खजाने को ढूँढ लिया

था। अब उनके सामने चुनौति थी, इस ज्ञान को समझने और दुनिया के साथ साझा करने की।

रेगिस्तान की रात खामोश थी, लेकिन पिरामिड के अंदर खोज जारी थी। अली और ओम, फिरौन की आत्मा से मिले ज्ञान को समझने और उसका अध्ययन करने में लगे थे। उन्होंने प्राचीन भाषाओं के विशेषज्ञों और इतिहासकारों की मदद ली। धीरे-धीरे, उन नक्शों और चित्रों का रहस्य खुलने लगा।

उन्होंने जाना कि नक्शे मिस्र के विभिन्न खजाने और गुप्त स्थानों को दर्शाते हैं। कुछ नक्शे तो ऐसे भी थे जो गुप्त सुरंगों और भूमिगत कक्षों का रास्ता बताते थे। अली और ओम ने अपनी खोज जारी रखने का फैसला किया।

उन्होंने मिस्र सरकार और पुरातत्व विभाग से अनुमति ली और फिरौन के खजाने की खोज पर निकल पड़े। उनकी यात्रा उन्हें मिस्र के विभिन्न भागों में ले गई। उन्होंने रेगिस्तान के ऊँचे टीलों, घने जंगलों और प्राचीन मंदिरों का पता लगाया। रास्ते में, उन्हें कई खतरों का सामना करना पड़ा।

कुछ लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, तो कुछ ने उनसे खजाना छीनने की कोशिश की। लेकिन अली और ओम हार नहीं माने। उनकी हिम्मत और दृढ़ संकल्प ने उन्हें आगे बढ़ाया।

कई सालों की कड़ी मेहनत और लगन के बाद, अली और ओम को सफलता मिली। उन्होंने फिरौन के खजाने के कई हिस्सों को ढूँढ निकाला। इनमें सोने के आभूषण, चांदी के सिक्के, प्राचीन हथियार और दुर्लभ कलाकृतियाँ शामिल थीं।

उन्होंने अपनी खोजों को दुनिया के साथ साझा किया और मिस्र के इतिहास के बारे में हमारी समझ को गहरा करने में मदद दी। अली और ओम को उनकी बहादुरी और ज्ञान के लिए सम्मानित किया गया। लेकिन उनके लिए सबसे बड़ा इनाम यह था कि उन्होंने मिस्र के पिरामिडों के रहस्यों को सुलझाया और प्राचीन मिस्र के खजाने को दुनिया के सामने लाया।

सीख: यह कहानी हमें सिखाती है कि जिज्ञासा, साहस और दृढ़ संकल्प से हम कुछ भी हासिल कर सकते हैं।



पिलानी-झुंझनू(राज.)। पिलानी सेवाकेन्द्र के ब्र.कु. दलीप शेखावत ने आर्कटिक स्वीडन के जमे हुए जंगल में 220 किलोमीटर की पांच दिवसीय आत्मनिर्भर दौड़, आइस अल्ट्रा को शिव बाबा का झंडा उठाए और शिव बाबा के झंडे को दिव्य शक्ति और मार्गदर्शन के प्रतीक के रूप में विजयी रूप से फिनिश लाइन पर लहराया। इस उपलब्धि के साथ दुनिया की चार चरम अल्ट्रा-एंडयूरेंस दौड़ पूरी कर कीर्ति स्थापित किया।



फाज़िलगनर-उ.प्र.। शिवरात्रि के अवसर पर शोभायात्रा के उद्घाटन पश्चात् थाना प्रभारी पथरेवा हरeram सिंह यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भारती बहन।



व्यर्थ होते समय को बचाने के उपाय...

राजयोगी ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

“उन्हीं के द्वारा लिखे गए समय के ऊपर और उसमें भी विशेष संगम के समय के महत्व के बारे में उन्हीं के शब्दों में कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं...”

संगमयुग का यह अनमोल समय है। सारे कल्प में यह वही समय है जब हम भगवान से पूरा वर्सा लेने का पुरुषार्थ करके ऊंचे से ऊंचा भविष्य बना सकते हैं। इसका एक-एक क्षण कितना मूल्यवान है! अगर हम उसका सही रीति से उपयोग करें, प्रयोग करें तो मालामाल हो जाएं। अगर हम उसका उपयोग ठीक रीति से नहीं करें, गँवा दें तो कितना बड़ा नुकसान है! व्यक्ति आमतौर से कोई कार्य करता है तो देखता है कि इसके लाभ और हानि क्या हैं, जिसको हम निर्णय कहते हैं। निर्णय में माइनस और प्लस प्वाइंट सोचा जाता है। संगम का एक सेकण्ड, मिनट व्यर्थ गंवाने से कितना भारी नुकसान है! और फिर यह रिपीट (पुनरावृत्त) भी होता है। रिकरिंग लॉस है। फिर-फिर होने वाला नुकसान। यह नुकसान ऐसा है जो फिर-फिर होगा। एक दफा गँवा बैठे और आगे चलकर ठीक कर देंगे, ऐसा नहीं। गँवाया सो गँवाया हर कल्प, कल्प कल्पान्तर गँवाना पड़ेगा। भगवान का संग मिला, वह टीचर के रूप में मिला, सद्गुरु के रूप में मिला। वह पारलौकिक बाप हमें पारलौकिक वर्सा देने के लिए आया है। इतना प्यार से वह हमें मार्गदर्शन करता है, फिर हम उस समय को गँवा दें तो क्या कहेंगे? किन-किन बातों में हम अपना समय व्यर्थ गँवाते हैं- यह चर्चा करेंगे।

प्रभाव और उदासीनता से

कोसों दूर रहना

इसमें हैं, इम्पेशन (प्रभाव), डिप्रेशन। उदासीनता एक विश्वव्यापी बीमारी है। बहुत

“जिसे आप पढ़ रहे हैं, अपने आप को जिनकी शिक्षाओं से गढ़ रहे हैं तो उनके बारे में जानना भी जरूरी है। भ्राता जगदीशचन्द्र हसीजा ब्रह्माकुमारीज के मुख्य प्रवक्ता रहे। उन्हें सारे वेदों, शास्त्रों और आध्यात्मिकता की गहराई का ही सिर्फ ज्ञान नहीं था बल्कि वे उन भाग्यशाली आत्माओं में से एक थे जोकि स्वयं भगवान ने उन्हें चुना और साथ-साथ सृष्टि परिवर्तन के कार्य में अपना प्रमुख सहयोगी भी बनाया। वे जीवन में समय के सदुपयोग के ऐसे प्रबंधक थे जिन्हें जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ गँवाना गंवारा नहीं था। जिन्होंने मिले हुए जीवन के प्रत्येक पल प्रभु के कार्य में अर्पण कर दिए। खुशी-खुशी से, कठिन से कठिन परमात्मा द्वारा रचे ईश्वरीय यज्ञ का हरेक कार्य इतना सहज और सहर्ष रूप से किया जो आज भी हम सबके सामने पदचिन्ह हैं। ऐसे परमात्मा के प्रभु प्रिय आदि रत्न की पुण्य तिथि पर हृदय की गहराईयों से भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।”

लोग ऐसे हैं जो दिन में कई दफा डिप्रैस्ड होते हैं। अभी देखें तो ठीक हैं, खुश हैं परन्तु थोड़े समय के बाद देखें तो डिप्रैस्ड हैं। बार-बार ऐसा होता है। उसके कई कारण हैं। जब व्यक्ति यह सोच लेता है कि मैं किसी काम का नहीं। मैं बिल्कुल बेकार

हूँ, निकम्मा हूँ। देखता है कि दूसरा व्यक्ति आगे निकल रहा है, उसकी वाह, वाह हो रही है, उसे कुछ लाभ हो रहा है, मैं क्या कर रहा हूँ! मैं किसी काम का आदमी नहीं हूँ। खुद ही खुद के लिए कहता है कि मेरे जैसा निरुपयोगी और कोई नहीं। आमतौर पर उर्दू में चिड़्डी में लिखते थे- नाचीज। उस समय एक रिवाज जैसा था कि लोग अपने को कहते थे और लिखते थे कि नाचीज। नाचीज माना मैं कुछ नहीं। मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, दासों का दास हूँ। पाँव की धूल हूँ। कई लोग समझते हैं कि ऐसा कहना या ऐसा लिखना नम्रता है। लेकिन कुछ लोग अपने आपको अनुभव भी ऐसा करते हैं। ऐसी निकृष्ट भावना में चले जाते हैं। भक्तिमार्ग में माया से जो हार हमारी होती है उसका एक कारण यही है कि हम समझ बैठते हैं कि हम तो निकम्मे हैं, किसी काम के नहीं। हे प्रभु, आप ही हमारे ऊपर कृपा करो, हमें छुड़ाओ। हम तो नीच हैं, पापी हैं। ऐसे अपने को खुद गाली देते थे। यह हीन भावना की महसूसता है, आत्म विश्वास की कमी है। अब संगमयुग में यह उल्टा हो गया।

भगवान आकर कहते हैं, “मीठे बच्चे, तुम तो इष्ट हो। देखो, तुम्हें आवाज सुनाई नहीं देती, तुम्हारे भक्त तुम्हें याद कर रहे हैं, पुकार रहे हैं? शान्तिदेवा, शान्तिदेवा कह रहे हैं। ये आप ही तो थे जिन्होंने उनको शान्ति दी थी।” भूत और भविष्य जो पुनरावृत्त होता है, बाबा वह बताते हैं। भूतकाल पुनरावृत्त होता है। इसीलिए कहते हैं भूत, भविष्य बनता है चक्र का सब राज समझाकर बाबा कहते हैं कि पहले तुम क्या थे! आप ही सृष्टि के आधारमूर्त हो, उद्धारमूर्त हो। बाबा फिर से हमारे में आत्म विश्वास जाग्रत करते हैं और उसका विकास कराते हैं। परन्तु हम कोई बात होने पर, कोई परिस्थिति आने पर अपना विश्वास खो बैठते हैं।



रघुवीरपुरी-अलीगढ़ (उ.प्र.)। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ठाकुर रघुराज सिंह, अध्यक्ष एवं राज्य मंत्री श्रम व सेवायोजन, प्रशांत सिंघल, महानगर महापौर, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।



नागौर-राज.। शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर, राजस्थान सरकार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. वसु तथा अन्य।



दिलशाद गार्डन-दिल्ली। ‘खुशनुमा लाइफ जीने की कला-राजयोग’ पर आयोजित आध्यात्मिक वार्ता के पश्चात् विधायक संजय गोयल, शाहदरा इलेक्ट्रॉनिक्स एरिया को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. इन्द्रा दीदी। साथ हैं प्रीति जी, क्रांतिकारी, दिलशाद कॉलोनी तथा अन्य।



राजापार्क-जयपुर (राज.)। नेशनल इंटीग्रेटेड टयूरिज्म आर्टिस्ट्स एंड एक्टिविस्ट्स द्वारा राजस्थान में संवेदना-2 अभियान का पोस्टर लॉन्च और अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्मान समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पूनम दीदी, जयपुर सबजोन, प्रीतिपाल सिंह पन्नो, धर्मेन्द्र जी, डॉ. अमिता सांघी तथा अन्य।



देहरादून-उत्तराखंड। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तारा बहन, शशि चौहान, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष, सोनिया वर्मा, पार्षद, चेलसी शर्मा, अधिवक्ता तथा अन्य।



चिरकुंडा-झारखंड। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कुल्टी मदद फाउंडेशन द्वारा महिला सम्मान समारोह में ब्र.कु. पिकी व ब्र.कु. उषा को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया गया।



बिलावर-झारखंड। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधायक सतीश शर्मा, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. शुभ तथा अन्य।



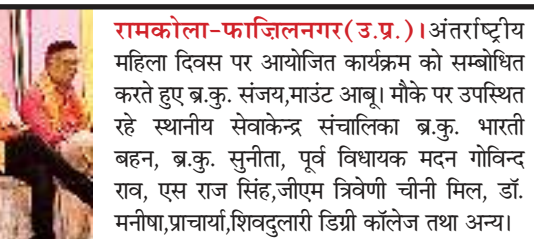
देहरा-हि.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. कमलेश व ब्र.कु. शिवानी को आध्यात्मिक और सामाजिक उत्कृष्ट सेवाओं के लिए विधायक विक्रम ठाकुर व भाजपा मंडल जिला देहरा के विभिन्न मोर्चा की अध्यक्षता द्वारा सम्मानित किया गया।



पीतमपुरा-दिल्ली। 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर केक कटिंग करते हुए राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश, माउंट आबू, ब्र.कु. प्रभा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



मुआना-सफीदों (हरियाणा)। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए जीएमएस डायरेक्टर ब्र.कु. भारत भूषण, पानीपत, ब्र.कु. भानु, माउंट आबू, ब्र.कु. कीर्ति, ब्र.कु. कंचन तथा अन्य।



रामकोला-फाजिलनगर (उ.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. संजय, माउंट आबू। मौके पर उपस्थित रहे स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भारती बहन, ब्र.कु. सुनीता, पूर्व विधायक मदन गोविन्द राव, एस राज सिंह, जीएम त्रिवेणी चीनी मिल, डॉ. मनीषा, प्राचार्या, शिवदुलारी डिग्री कॉलेज तथा अन्य।

ज्ञान रतन हैं...ये केवल इनसे सीखा



- ब्र.कु. अनुज भाई, दिल्ली

वाले के कहने
से परमात्मा की
बात, और ज्ञान

सर्व प्रथम परमात्मा के घर का अनुभव इसको हम पहला अनुभव भी कहें तो कोई बड़ी बात नहीं है। जैसे हम सभी डायमंड हॉल में जाते हैं और परमात्मा के महावाक्य चल रहे होते हैं, उसमें जो कुछ भी सुनाया जा रहा होता है तो उस समय हम सब उतना ज़्यादा उस बात को नहीं समझ पाते क्योंकि नये-नये होते हैं। और शुरू की बात है उस समय की जो स्थिति होती है उस समय वो बात समझ नहीं आ रही होती तो हमें लगता है कि क्या है! लेकिन जैसे ही आप धीरे-धीरे इस ज्ञान को समझने लग जाते हैं तो उस ज्ञान को समझने के बाद उसको अन्दर उतारने के लिए उसके मनन-चिंतन की अति आवश्यकता होती है।

तो हमारा अनुभव दादी जी के साथ यही है कि जब हम सभी भट्टी में समर्पित भाईयों की जाते थे तो उस समय दादी जी की क्लासेज होती ही थी निश्चित रूप से दो से तीन लगभग, तो उसमें दादी एक-एक चीज़ की, बाबा के साथ प्यार की गहराई का अनुभव कैसे करें उसके लिए मनन-चिंतन सुनाते थे। तो हम सबके अन्दर जो प्रश्न होता है कि हमें बाबा की याद इतनी क्यों नहीं आती? या हम इतना ज़्यादा बाबा के साथ जुड़ क्यों नहीं पाते? जैसा दादी जुड़े। तो उसमें एक बार प्रश्न-उत्तर का एक सेशन रखा था

और दादी से प्रश्न पूछा जा रहा था। तो उसमें किसी ने पूछा कि दादी जब हम योग में बैठते हैं तो कई बार या स्वप्नों में भी हमको गंदे या थोड़ा-सा जो चित्र नहीं आने चाहिए वो भी आते हैं, तो इसका कारण क्या है? तो दादी को ये

उस दिन ये बात रियलाइज़ हो गई कि जिन्होंने बचपन से ही अपनी इंद्रियों को सम्भाला, अपने आप को परमात्मा के साथ रखा और ऐसे माहौल में पले-बढ़े, ऐसी आध्यात्मिक यात्रा की कि जिसमें इन सारी चीज़ों में उनका कोई

बात अच्छे से ज़हन में
उतर गई कि

ह म
अच्छे से प्रयास करते हैं, आज की दुनिया में हम सब देखें कि कितना कुछ है देखने के लिए और कितना अनर्गल चीजें हैं, जो हमारे सामने आती हैं और उनको देखते हैं। भले वो चित्र इतने गंदे नहीं हैं लेकिन फिर भी उन चित्रों के वायब्रेशन तो हैं। जिसमें बाबा मिसिंग है, और-और बातें मिसिंग हैं, दुनियावी बातें हैं। तो आप सोचो कि हमारा कनेक्शन कैसे होगा? तो उस दिन के बाद जो मनन-चिंतन का दौर चला, जो चेंज हुआ वो आज तक भी उन्नति करवा रहा है, स्थिति बदल गई, कैसे योग करना है उसके लिए पहले रिमूव करना है। इन सारी बातों से खुद को हटाना। ये चीजें न देखना, न सुनना, न उसपर बात करनी। तो एक वायब्रेशन से, एक छोटी-सी बात से इतना कुछ समझने और सीखने को मिल गया जोकि हम पढ़ के भी नहीं समझ पाते थे।

दूसरा, उसी के साथ एक अनुभव है कि कोई एक सन्यासी आये थे जिन्होंने बोला कि दादी मैं चाहता हूँ कि आप 120 साल भी रहें। तो उन्होंने कहा जैसा बाबा चाहे, जैसा परमात्मा चाहे। कहने का मतलब है कि किसी सामने

की गहराई न भूलना ये सबसे बड़ी कला है। मतलब चाहे कोई कितना भी साधक है, साधु है, संत है वो अपनी बात अपने भाव से हमको कहता है लेकिन हम उसके प्रभाव में आते हैं, लेकिन दादी कभी भी किसी के प्रभाव में नहीं थी, एक के प्रभाव से प्रभावित थी और वो भी परमात्मा के।

तो ऐसी दादी रत्नों की खान कैसे थीं अब वो बात समझ में आई थी। क्योंकि दिन-रात रतन सुन रहा है, रतन ही बोल रहा है, रतन ही अपने अन्दर धारण कर रहा है। ऐसे रत्नों की खान दादी रतनमोहिनी जी ने हम सबको रत्नों से पाला है। तो मेरा ये पर्सनल अनुभव है कि दादी जी ने हमें मनन-चिंतन करना सिखाया। जीवन को कैसे जिया जाये और उसमें कुमार जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए और क्या विधियाँ हैं, कैसे खुद को बिजी रखा जाये। अलग-अलग तरीके बताये और आज भी वो हमारे साथ जहन में चलते हैं।

तो ऐसी हमारी परमआदरणीया,
परमश्रद्धेय दादी जी को अति-अति-
अति विशेष रूप से श्रद्धा समन।



बात समझ ही नहीं आई, इसका मतलब ये है कि उनका जो फेस था, फेस का जो वायब्रेशन था ऐसा कि गंदे चित्र! ये क्या होते हैं? कहने का मतलब है कि

वास्ता ही नहीं रहा। केवल ज्ञान, योग और कुछ नहीं। परमात्मा का साथ और कुछ नहीं। ये है परमात्मा से योग लगाने और लगाने का तरीका। उस दिन ये

प्रश्न : जब हमारे अन्दर हार्मोनल चेंजेस होते हैं तो हमारे मन के विचार ऑटोमेटिकली ही चेंज होने लगते हैं। भले वो कभी विकार के प्रति हों,

या वो क्रोध या इरीटेशन के रूप में हों, तो हम ऐसा क्या करें कि शारीरिक बदलावों का हमारे ऊपर असर न हो?

उत्तर : बिल्कुल जब हार्मोनल चेंजेस होते हैं मनुष्य के शरीर में, बड़ों के में भी हो जाते हैं तो किसी में इम्प्युरिटी जाग्रत होती है तो किसी में देह के आकर्षण होते हैं। किसका झुकाव संसार की ओर बढ़ता है, और कई तरह की चीजें कोई इरीटेट रहने लगते हैं, किसी की खुशी चली जाती है। बहुत अच्छी दो चीजें इसके लिए करेंगे। पानी चार्ज करके पीना है क्योंकि कई बहनों को मैंने कराया है। बहनें पूछती हैं कि ऐसा होता है हमें। तो मैं कहता हूँ मुझे सब पता है ऐसा होता है इसमें लज्जा की बात नहीं है। तो दो स्वमान हैं- एक तो मैं परमपवित्र आत्मा हूँ या मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। सात बार संकल्प करेंगे दृष्टि देकर। पानी चार्ज हो जायेगा। वो पीते रहेंगे। और अपने को चार्ज रखने के लिए मैं हमेशा एक चीज कहता हूँ सबको कि सवेरे उठकर कुछ सुन्दर संकल्प आपको करने चाहिए। लेकिन जब मनुष्य सवेरे उठता है तो उसका मन, उसका ब्रेन बहुत ही शांत या किसी का डल रहता है, विचार उठते नहीं हैं। तो ऐसे में दस सुन्दर विचार अपने पास रख लेने चाहिए। जिसे सवेरे उठकर पढ़ लो, फिर रिपीट कर लो। तो मन चार्जिंग स्थिति में आ जाएगा। और फिर इन सबके कारण जो इफेक्ट होता है माइंड पर, ब्रेन पर, व्यवहार बदलता है, इरीटेट होता है मनुष्य, उससे थोड़ा बच जाएंगे। अपनी बात अपनी किसी सखी को शेयर अवश्य करते रहना चाहिए। और बाबा सखा है तो



- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

मन की बातें

उनसे भी शेयर करना चाहिए। अगर बाबा से करना सीख लें, उसको गुड फ्रेंड बना लें तो वो वैसे ही ठीक कर देता है।

प्रश्न : बाबा कहते हैं कि यदि कोई तुम्हें देह की दृष्टि से देखता है तो तुम्हारे ही पुरुषार्थ में कहीं कोई कमी है। तो हम क्या ऐसा पुरुषार्थ या अभ्यास करें जो लोगों की हमपर बुरी दृष्टि न जाये?

उत्तर : ये मैंने देखा प्रैक्टिकल में बहुत सारी बहनें बहुत अच्छी पर्सनैलिटी वाली होती हैं। लेकिन उनके चेहरे पर डिवानिटी होता है। कोई उन्हें बुरी दृष्टि से नहीं देखता। और बहुत बहनें ऐसी होती हैं जो बहुत सुन्दर नहीं होती लेकिन उनके प्रति लोगों की दृष्टि जाती है। हमारे अन्दर क्या है वो रिफ्लेक्ट होता रहता है ना बाहर, इसलिए कुछ अच्छे अभ्यास करते रहना चाहिए, जैसे- पवित्रता की देवी हूँ, मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, और आजकल मैं जो सीखा रहा हूँ, अपने

चारों ओर शक्तियों का औरा क्रिएट करें, आभामंडल क्रिएट करें। सात बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। फिर विजुअलाइज करें कि चारों ओर शक्तियों का घेरा बन गया है। उसके बीच में मैं हूँ और दूसरों को आत्मिक दृष्टि से देखें तो दूसरों की दृष्टि बुरी नहीं जायेगी। क्योंकि बहनों का इसको फेस करना पड़ता है। तो जितना अच्छा स्वमान होगा, पॉवरफुल बनेके भी रहना है, कमजोरी भी न दिखाई दे। कई पवित्र आत्मा ऐसी हो जाती हैं थोड़ी डरने लगती हैं। थोड़ी कमजोर हो जाती हैं। तो मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मेरे साथ स्वयं भगवान है ये स्मृति में रखेंगे तो जो सूक्ष्म डर होता है वो निकल जायेगा।

प्रश्न : हमारी उम्र के अनुसार अगर हमारा किसी मेल की तरफ अट्रैक्शन होता है तो उसपर कैसे काबू पाया जाये?

उत्तर : आत्मिक दृष्टि रखनी है, और अपनी प्युरिटी के बारे में स्वयं से चिंतन अवश्य करते रहना है। क्योंकि चिंतन का बड़ा महत्व है। सवेरे कर लो, कभी भी आप अकेले हों तो अपने से चिंतन करें, अब मेरा वो मार्ग नहीं है, अब मेरा ये मार्ग प्युरिटी का है। अब मैंने भगवान को अपना लिया है। मुझे कलियुग की राहों पर नहीं चलना है। मुझे तो सगंमयुग की इस पवित्रता की राह पर चलना है। अब भगवान को मैंने अपना साथी बना लिया है।

इस-इस तरह के जो सुन्दर विचार होंगे कि मैंने भगवान को वचन दे दिया है पवित्रता का, मेरी दृष्टि अब भगवान पर है, मनुष्यों की ओर तो जा ही नहीं सकती। बार-बार अपने को स्ट्रॉन करेंगे तो दृष्टि हटती रहेगी और धीरे-धीरे खत्म हो जायेगी। कई बार जो चीजें हम देखते हैं या सुनते हैं या पढ़ते हैं क्योंकि आजकल मोबाइल सभी के पास है। तो वहाँ पर

भी हमें संयम की जरूरत है। क्योंकि वहाँ से हमारे अन्दर गंदगी जा रही है। बहुत गंदगी होती है इन चीजों में हालांकि मैं देखता नहीं लेकिन मुझे कई कुमार आकर बताते हैं कि हमारा जीवन तो बिल्कुल खराब हो गया है। हमने छह मास ये गंदगी देख ली है अब वही स्वप्न आते हैं और वही विचार रहते हैं। सारा खेल बिगड़ गया है जिंदगी का। अब उसको हम कैसे भूलें? बहुत बड़ी कठिनाई हो जाती है। वही सीन उनके सामने आते हैं। गुगल आदि पर बहुत गंदगी डाल रखी है लोगों ने, तो इससे बचेंगे जो हमारा मार्ग ही नहीं है तो वो हम क्यों देखें? आप फिज़िक्स के स्टूडेंट हैं तो आप कॉर्म्स थोड़े ही पढ़ेंगे! तो वो हमारा सब्जेक्ट ही नहीं है ये संकल्प अपने मन में दृढ़ कर दें। फिर उन चीजों की ओर हमारा ध्यान नहीं जायेगा। कई लोग सोचते हैं नॉलेज बढ़ जाये लेकिन नॉलेज नहीं गंदगी बढ़ेगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल



उपलब्ध पुस्तकें

**जो आपके
जीवन को
बदल दे**



लास्ट सो फास्ट कैसे जायें?



राजयोगी ब.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि योग की ओर मन खींचने लगे तो समझो हमने बहुत कुछ पा लिया है। फिर तो हम बाबा के पास जाकर बैठेंगे और बाबा से उसके सम्पूर्ण वायब्रेशन हमको मिलते रहेंगे। वायब्रेशन के रूप में उसके सर्व खजाने आत्मा में समाते हैं। चाहे सुख हो, शान्ति हो, पवित्रता हो, खुशी हो, उसका प्रेम हो, शक्तियां हो, उसकी दुआएं हो सब वायब्रेशन के रूप में ही आत्मा में समाती रहती हैं। बहुत अच्छा होगा यदि आप ये अभ्यास कर लें। अब आगे पढ़ेंगे...

पुराने भी हैं जो ढीले हो गए हैं। उनको भी ये अभ्यास कर लेना चाहिए। और पुराने में भी और तेज चलना चाहते हैं, समय की नाजुकता को जो समझते हैं उन्हें भी 4 बार 10-10 मिनट अवश्य बैठना चाहिए। कई भाई-बहनें ये कर रहे हैं, हमारे समर्पित भाई-बहनें भी करते हैं। जब भी टाइम मिलता है कहीं भी, बाबा के बहुत सारे रूम, मेडिटेशन रूम बने हुए हैं, कहीं भी बैठकर अच्छा योग करते हैं। योग करने में हमें 10 मिनट के लिए ये लक्ष्य ले लेना चाहिए। जैसे इस बार हम 10 मिनट पांच स्वरूपों का अभ्यास करेंगे, इस बार हम दस मिनट आत्मा के स्वरूप पर स्थित होंगे, आत्मा का चिन्तन करेंगे। इस बार 10 मिनट में हम परमधाम में बाबा के साथ जाकर बैठेंगे,

जिस रास्ते जाना नहीं उसकी राह पूछने से क्या लाभ...!!!

फिर सूक्ष्म वतन में बापदादा के सामने जाकर दृष्टि लेंगे, बातें करेंगे। ऐसे एक लक्ष्य लेकर योग करने से हम उस ड्रिल में व्यस्त होंगे और बुद्धि भटकेगी नहीं।

ये सभी के लिए बहुत-बहुत आवश्यक है। आगे जाना है, आप अभी-अभी आये हैं। अच्छी तरह जानते हैं प्रभु मिलन के लिए पवित्रता पहली शर्त है। जो पवित्र नहीं वो भगवान को प्रिय भी नहीं और वो योगी भी

प्रतिज्ञा करें भगवान से कि किसी भी कीमत पर इस पथ से हम विचलित नहीं होंगे। माया तो चारों ओर है। गन्दी चीजें दिखाई भी बहुत देती हैं, इलेक्ट्रॉनिक्स के साधन भी पतन का बहुत बड़ा कारण बनते जा रहे हैं। लेकिन हिन्दी में एक कहावत है- जिस पेड़ के आम नहीं खाने उसके पत्ते गिनने से क्या लाभ!

नहीं बन सकते हैं। क्योंकि इसके पीछे राज ये है कि योग में बुद्धि को स्थिर करने के लिए परमात्म स्वरूप पर, बुद्धि का बहुत डिवाइन और शक्तिशाली होना आवश्यक है। और यदि कोई विषय विकारों में है तो उसकी शक्तियां नष्ट होती रहती हैं और उसकी बुद्धि स्ट्रॉन नहीं हो पाती।

ब्रह्मचर्य का जो आधार इसको बनाया गया है उसका कारण यही है कि पवित्रता की शक्ति ब्रेन को डिवाइन करे, दिव्य करे,

शक्तिशाली करे ताकि वो स्थिर हो सके। कमजोर बुद्धि स्थिर नहीं हो सकती। तो पहली धारणा पवित्रता। प्रतिज्ञा करें भगवान से कि किसी भी कीमत पर इस पथ से हम विचलित नहीं होंगे। माया तो चारों ओर है। गन्दी चीजें दिखाई भी बहुत देती हैं, इलेक्ट्रॉनिक्स के साधन भी पतन का बहुत बड़ा कारण बनते जा रहे हैं। लेकिन हिन्दी में एक कहावत है- जिस पेड़ के आम नहीं खाने उसके पत्ते गिनने से क्या लाभ! तो जिस मार्ग पर हमें चलना नहीं है उसकी चीजें क्यों हम देखें! हम इम्यूर फिल्में, गन्दी चीजें जो आती हैं व्हाट्सएप पर, फेसबुक पर, यूट्यूब पर उन्हें हम क्यों देखें?

लक्ष्य बना लें, अपने को टीच करें (अपने को पढ़ावें) ये हमारा मार्ग नहीं है। ठीक है दुनिया में गन्दी ही गन्दी है, इसी को जीवन मान लिया है सबने। लेकिन हमारा ये मार्ग नहीं है। ऐसी स्वयं से बातें करते हुए प्युरिटी को स्ट्रॉन करें। हमें उधर देखना ही नहीं है, उसके लिए सोचना ही नहीं है, जिस मार्ग पर हमें जाना नहीं है, भगवान को वचन दे दो- हम सम्पूर्ण पवित्र बनकर तुम्हारे महान कार्य को सफल करेंगे। और भगवान को एक बार वचन दे दिया तो उसे वापिस नहीं लेंगे।

कुछ भी करना पड़े, साथियों को समझा दो कि भगवान को वचन दे दिया हमने, हम सब कुछ छोड़ने को तैयार हैं पर पवित्रता का पथ नहीं छोड़ेंगे। ये ईश्वरीय पथ है, ये प्रभु मिलन का मार्ग है। भगवान को खोजने का मार्ग नहीं, इसमें निरन्तर प्रभु मिलन का सुख हम प्राप्त कर सकते हैं, अतिन्द्रिय सुखों में रमण कर सकते हैं। ऐसा यदि आप करेंगे तो आप बहुत आगे चले जायेंगे।



रामपुर-उ.प्र.। होली मिलन मेला में कृषि मंत्री बलेदव सिंह और लखो को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता। साथ हैं ब्र.कु. प्रभा तथा अन्य।



पुखरायां-उ.प्र.। नवनिर्वाचित भाजपा महिला जिलाध्यक्ष रेणुका सचान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता बहन, राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला, राज्यमंत्री अजीत पाल, विधान परिषद सदस्य अविनाश सिंह चौहान तथा अन्य।



गाजियाबाद-उ.प्र.। प्रभु साधना भवन के निर्माण हेतु भूमि पूजन समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, ब्रह्माकुमारजी वुमेन विंग चेअरपर्सन, ब्र.कु. रानी दीदी, ब्र.कु. लाज दीदी, ब्र.कु. जयंती दीदी, डॉ. ऊषा किरण, डॉ. एमडी गुप्ता, विनोद त्यागी, अध्यक्ष रजत कार्पेट गुप्त, ऋषभ निर्माण, निदेशक जेडी पब्लिक स्कूल, प्रधानाचार्या अर्चना त्यागी, मनोज त्यागी, ब्रज भूषण शर्मा, आरडब्ल्यू अध्यक्ष एडवोकेट, भाजपा नेता राजेन्द्र त्यागी तथा अन्य।



गया-सिविल लाइंस(बिहार)। शिवरात्रि के अवसर पर निकाली झांकी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शीला दीदी, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर के उपायुक्त शिशिर सौरभ, प्रतिष्ठित व्यापारी प्रदीप जैन तथा आयकर निरीक्षक सुधीर।



आनन्दपुरी कॉलोनी-हाथरस(उ.प्र.)। विश्व जल दिवस पर जल संरक्षण जागरूकता प्रदर्शनी के द्वारा सभी को जल का महत्व बताने के पश्चात् समूह चित्र में प्रतिज्ञा करते हुए ब्र.कु. शान्ता दीदी, ब्र.कु. वन्दना तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



शीला बाईपास-रोहतक(हरियाणा)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं श्रीमती सरिता खनगवाल, ब्लॉक एजुकेशन अधिकारी, नीना सुहाग मंडल, भूमि संरक्षण अधिकारी, श्रीमती अनीता मलिक, ब्र.कु. रक्षा बहन तथा अन्य।

ऊपर से नीचे

- अब अपने शुभ भावना की वृत्ति, शुभ कामनाओं की वृत्ति से में वायब्रेशन फैलाओ।(5)
- लक्ष्य सबका बहुत ऊंचे ते ऊंचा है लेकिन प्रत्यक्ष रूप में लक्षण हैं।(5)
- पाण्डव "लेकिन" शब्द अच्छा लगता है? नहीं अच्छा लगता। इसके लिए सबसे विधि है, पहले हर एक अपने अन्दर चेक करो - मेरी वृत्ति में किसी आत्मा के प्रति भी कोई निगेटिव वायब्रेशन है?(3)
- सभी ने अनुभव कर लिया है, वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी से होता है, अगर आप फास्ट चाहते हो तो नॉलेजफुल बन, क्षमा स्वरूप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो।(2)
- अगर विश्व का वायुमण्डल

- परिवर्तन करना है, लेकिन अपने मन में किसी एक आत्मा के प्रति भी अगर व्यर्थ वायब्रेशन वा सच्चा वायब्रेशन भी निगेटिव है तो वह विश्व परिवर्तन कर नहीं सकेगा। बाधा पड़ता रहेगा, लग जायेगा।(3)
- अभी-अभी अपनी वृत्ति को एकाग्र कर सकते हो? कहाँ भी वृत्ति में नहीं आये। अचल, एकाग्र, शक्तिशाली रहे।(4)
 - कितनी भी सेवा कर लो, रोज़ आठ-आठ कर लो, योग शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना निगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो।(3)
 - महिला, स्त्री।(2)
 - अधिक, बहुत, ज्यादा, अत्यधिक।(2)
 - बाप को करने के लिए अपनी व दूसरों की वृत्ति को पॉजिटिव बनाओ।(3)
 - घबराहट, डर।(2)

अव्यक्त मुरली 24-02-2002 (पहेली-16) 2024 -25

1				2		3			4
5						6			
			7					8	
9				10	11				
							12		
13		14		15					16
			17				18		
				19					
	20			21			22		

15/24- पहेली का उत्तर (अव्यक्त मुरली 03-02-2002)

ऊपर से नीचे: 1. विज्ञानी, 2. यथार्थ, 3. निश्चय, 4. काम, 5. सूर्यवंशी, 7. भविष्य, 8. खुश, 10. वायुमण्डल, 11. नया, 12. जमा, 14. साइडसीन, 16. कमल 17. प्रतिज्ञा।
बायें से दायें: 1. विजय, 3. निराकार, 6. कार्य, 9. अविनाशी, 10. वायब्रेशन, 13. हिंसा, 15. मस्तक, 17. प्रमाण, 18. मन, 19. ज्ञान, 20. लक्ष्य, 21. समान।

बायें से दायें

- मन्दिर की मूर्तियां प्रत्यक्ष रूप में द्वारा सेवा कर रहे हैं अर्थात् आप आत्मायें मन्दिर की मूर्तियां सेवा कर रही हैं।(5)
- चाहे पाण्डव, चाहे शक्तियां, एक-एक का सहयोग, सफलता को प्राप्त करा रहा है। आप यह नहीं समझना हम तो सिर्फ देखने वाले हैं, नहीं। करने वाले हैं। सर्व के से बेहद का कार्य चल रहा है।(4)
- की मूर्तियां प्रत्यक्ष रूप में वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं अर्थात् आप आत्मायें की मूर्तियां सेवा कर रही हैं।(3)
- आपके जड़ चित्र अब तक, लास्ट तक वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं।(2)
- जो के स्टेज पर निमित्त बच्चे हैं, वह सदा एक ही संकल्प में रहते कि बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें?(2)
- लक्ष्य और समान होना अर्थात् बाप समान बनना।(3)
- बीती को बिन्दी लगाना और के सिन्धु बन जाना।(3)
- चारों ओर का वायुमण्डल अगर सम्पूर्ण निर्विघ्न, रहमदिल, शुभ शुभ कामना वाला बन जायेगा तो प्रत्यक्षता

में कोई देरी नहीं।(3)

- अभी-अभी अपनी वृत्ति को एकाग्र कर सकते हो? कहाँ भी वृत्ति हलचल में नहीं आये। , एकाग्र, शक्तिशाली रहे।(3)
- रस्म, रिवाज, प्रथा।(2)
- नॉलेज है- यह रांग है, यह राइट है। नॉलेजफुल बनना रांग नहीं है, लेकिन वृत्ति में धारण करना यह रांग है क्योंकि अपने में ही मूड ऑफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकसान होता है। जब को भी आप पावन बनाने वाले हो तो यह तो आत्मायें हैं।(3)
- अभी-अभी वृत्ति पॉवरफुल करो, वायब्रेशन पॉवरफुल बनाओ, वायुमण्डल पॉवरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है, से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है।(2)
- आपके की स्थापना के बाद ही साईस ने वृद्धि को प्राप्त किया है तो उसका फायदा कुछ तो लेंगे ना।(2)
- ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा, कैसी भी बार-बार गलती करने वाली आत्मा रही लेकिन बापदादा ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा रहमदिल बनें। के सागर बनें।(2)

अंतिम विदाई में हुए शामिल सांसद व भाजपा जिलाध्यक्ष...

दादी का पार्थिव देह पंचतत्व में विलीन, हजारों आँखें नम

शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। मानवता की सेवा में सर्वस्व न्योछावर कर लाखों लोगों को सौहार्द, शान्ति, अध्यात्म और मूल्यों का पाठ पढ़ाकर श्रेष्ठ चरित्र निर्माण करने वाली ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय दादी रतनमोहिनी जी का पार्थिव देह गुरुवार सुबह 10 बजे पंचतत्व में विलीन हो गया। हजारों लोगों ने नम आँखों से दादी को अंतिम विदाई दी। युवाओं की दादी के नाम से प्रसिद्ध, आपने पूरे जीवन में लाखों युवाओं को नशामुक्त कर जीवन में नई राह दिखाई। मुख्यालय शान्तिवन के दादी निवास के सामने गार्डन में अंतिम संस्कार किया गया। दादी

प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. करुणा व डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, दादी की निजी सचिव ब्र.कु. लीला दीदी सहित वरिष्ठ अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों ने मुख्याग्नि दी। हजारों लोगों ने ओम् ध्वनि की और ओमशान्ति मंत्र का उच्चारण कर व मौन रहकर श्रद्धासुमन अर्पित किए। अंतिम यात्रा में पहुंचे जालौर-सिरोही के सांसद लुंबाराम चौधरी ने कहा कि दादी का जाना पूरे जिले के लिए अपूर्णीय क्षति है। गृहमंत्री अमित शाह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने भी शोक संदेश भेजकर संवेदना



सांसद व भाजपा जिलाध्यक्ष मुख्याग्नि देते हुए



भोजन बनाने से लेकर हर काम में बंटाया हाथ

1950 का वह दौर जब ब्रह्माकुमारीज का स्थानांतरण माउंट आबू हुआ था। उस वक्त दादी की आयु मात्र 26 साल थी। संस्थान में मात्र 350 लोग थे। तब सभी मिल-जुलकर भोजन बनाने की सेवा करते थे। ऐसे में दादी रतनमोहिनी ने भी साफ-सफाई से लेकर भोजन की सेवा में हाथ बंटाया। यहां तक कि दादी 80 साल की उम्र तक अपने सारे निजी कार्य स्वयं करती रहीं।

को संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, संयुक्त मुख्य

व्यक्त की। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष रक्षा भंडारी, पूर्व विधायक जगसीराम कोली, विश्व

26 साल की उम्र में पहली बार माउंट आबू आई

दादी रतनमोहिनी 26 साल की युवावस्था में सिंध से पहली बार ब्रह्मा बाबा के साथ माउंट आबू आई थीं। विश्व सेवा और युवाओं को सद्मार्ग पर लाने की ऐसी धुन लगी कि आप सदा के लिए बाबा का हाथ पकड़ यहीं की होकर रह गईं। आपने अपना पूरा जीवन युवाओं के सशक्तिकरण, युवा जागृति और महिलाओं के सशक्तिरण में लगा दिया। युवाओं से विशेष प्रेम, स्नेह के चलते आपको सभी युवाओं की दादी कहकर पुकारते थे।

हिन्दू परिषद के प्रमुख राजाराम, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हरीश चौधरी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रदेश प्रमुख हीराराम बारड़,

34 साल की उम्र में जापान में दिया संबोधन

दादी जब मात्र 34 साल की थीं तो जापान में आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन में दादी प्रकाशमणि के साथ ब्रह्माकुमारीज का प्रतिनिधित्व किया था। जब आपने सम्मेलन में अपना उद्बोधन देना शुरू किया और भारतीय संस्कृति की महिमा बताई तो चारों ओर सन्नाटा छा गया। इतनी कम उम्र में आध्यात्मिक गहराई की बातें सुनकर वहाँ मौजूद विद्वान अर्चभित रह गए। इस दौरान एक साल तक एशिया के देशों में अध्यात्म और योग का परचम लहराया।

पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष सुरेश कोठारी, पूर्व जस्टिस वी. ईश्वरैया, सिविल जज शिवकांत कुशवाहा, ग्वालियर सहित शहर के भिन्न-भिन्न

एकांत, अध्ययन और अध्यात्म में रही रुचि

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने दादी के साथ का अनुभव बताते हुए कहा कि दादी में बचपन से ही भक्तिभाव के संस्कार थे। वह छोटी उम्र में ही खेलने-कूदने की जगह ध्यान व अध्ययन में अपना वक्त बिताती थीं। बचपन से ही पढ़ाई में होशियार के साथ-साथ उनका स्वभाव धीर-गंभीर रहा। क्लास में समय पर जाना और होमवर्क समय से करने के कारण वह अपने सभी शिक्षकों की सबसे प्रिय विद्यार्थियों में अन्त तक शामिल रहीं।

संस्थान के प्रतिनिधि, गणमान्य प्रबुद्धजन एवं देश-विदेश से आये पांच हजार से अधिक लोगों ने दादी को मुख्याग्नि दी।

राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री सहित प्रमुख महानुभावों ने भी जताया शोक

ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका 101 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के निधन पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, केंद्रीय मंत्री से लेकर कई राज्यपाल और मुख्यमंत्रियों ने शोक जताया व संवेदना व्यक्त की।

■ महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने शोक संदेश में लिखा कि दादी रतनमोहिनी जी के निधन के बारे में जानकर बहुत दुःख हुआ। वे ब्रह्माकुमारीज संस्थान का एक प्रकाश स्तंभ थीं। इस संस्थान ने मेरी जीवन यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दादी रतनमोहिनी जी ने अपनी शिक्षाओं और कार्यों से अनगिनत लोगों की सोच और जीवन को संवारा है। उन्होंने आजीवन सेवा, सद्भाव, शान्ति और परोपकार के संदेश का प्रसार किया। मैं पूरे विश्व में विद्यमान ब्रह्माकुमारीज परिवार के सभी सदस्यों एवं इस संस्था के शुभचिंतकों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करती हूँ।

■ दादी के निधन पर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि आप आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर थी। आप सदैव प्रकाश, ज्ञान और करुणा के रूप में याद की जाएंगी। आपकी जीवन यात्रा सादगी और सेवा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता में निहित रही। आपकी विनम्रता, धैर्यता, विचारों की स्पष्टता और दयालुता सदा याद रही। दुःख की इस घड़ी में मैं ब्रह्माकुमारीज परिवार के साथ हूँ।

■ मुंबई के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने शोक जताते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान की आदरणीया

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी के देहावसान की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया था। अपने 101 साल तक अनुशासित और साधनापूर्ण जीवन कई युवाओं के लिए प्रेरणादायी रहा। मैं उन्हें भावनापूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

■ राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने लिखा कि लाखों लोगों में आध्यात्मिक प्रकाश को जगाने वाली दादी रतनमोहिनी जी के सेवा कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता है।

■ मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शोक संदेश में लिखा कि ब्रह्माकुमारीज के लिए यह दुःख का क्षण है। मैं सभी सदस्यों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

■ गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने शोक संदेश भेजा है कि दादी जी ने अंतिम दिनों तक पूर्ण जीवन जिया। मात्र दो दिन की अस्वस्थता के बाद नश्वर देह त्याग दिया। आपने सात दशक तक समर्पित भाव से नारी जागृति, मानवीय मूल्यों, शान्ति और आध्यात्मिक जागृति के लिए जो सेवाएं की हैं, वह समाज और विश्व के लिए एक अनमोल धरोहर है।

■ गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने लिखा है कि दादी ने बचपन में ही ब्रह्मा बाबा के सानिध्य में अपना जीवन आध्यात्मिक सेवाओं के लिए समर्पित कर दिया। आप शतायु तक सेवाएं करते रहे। ऐसी पुण्य आत्मा के प्रति मेरी भावभीनी श्रद्धांजलि।

■ बिहार के माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने लिखा कि



दादी ने अपना पूरा जीवन समाज कल्याण में समर्पित कर दिया। उनके निधन से आध्यात्मिक जगत को अपूर्णीय क्षति हुई है। दुःख की इस घड़ी में मैं उनके अनुयायियों

के साथ हूँ।

■ तेलंगाना के माननीय मुख्यमंत्री अनुमोला रेवंत रेड्डी ने लिखा है कि 140 देशों में फैले ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी के निधन के समाचार से दुःखी हूँ। आपने अपना पूरा जीवन लोगों के कल्याण में लगा दिया।

■ केंद्रीय कृषि मंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान ने लिखा कि दादी जी का संपूर्ण जीवन योग, तपस्या और सेवा का प्रतीक रहा। उन्होंने लाखों लोगों को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनका स्नेह, विनम्रता और दिव्यता सदैव स्मरणीय रहेगी। उनका निधन संपूर्ण मानव समाज व आध्यात्मिक जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है।

■ तेलंगाना के माननीय राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने कहा कि दादी ने अपना पूरा जीवन मूल्यों और आध्यात्मिकता के प्रचार-प्रसार में लगा दिया।

■ गुजरात भाजपा के प्रवक्ता हिरन कोटक ने कहा कि दादी ने ब्रह्माकुमारीज के वैश्विक आंदोलन को उत्कृष्ट नेतृत्व प्रदान किया।

■ साथ ही लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागडे, केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, मध्यप्रदेश के कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, छ.ग. के राज्यपाल रमन डेका, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय सहित सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ विधान सभा, मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया, तेलगू अभिनेता सुमन गुरु, प्रसिद्ध एक्टर अनुपम खेर सहित भारत के गणमान्य व्यक्तियों ने भी अपने शोक संदेश भेज दादी जी की विशेषताओं को याद कर शोक जताया।